श्रीसीताराम ❀ श्रीसीताराम ❀ श्रीसीताराम

❀ श्री जानकी बल्लभायनमः ❀
श्रीमद्धनुमतेनमः
श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः

❀ श्री सीताराम लीला रहस्य ❀

प्रकाशकः—

श्री अनन्त श्री स्वामी सियाशरण जी
महाराज मधुकर

तच्चरणारविन्द चञ्चरीक

श्री स्वामी जानकी शरण जी मधुकर

प्रकाशन परिश्रमकर्ताः—

श्री रामगुलामशरण जी मधुकर

श्री चारुशीला मन्दिर, श्री चारुशीला बाग
श्री जानकी घाट, श्री अयोध्या जी।

प्रथमबार ५००] वि० २०२२ [निछावर १) रुपया

श्रीसीताराम ❀ श्रीसीताराम ❀ श्रीसीताराम

दो बातें

भगवान के भगवत्ता तो अगोचर अपार है फिर भी कुछ कहना अपना हितकारक है प्रस्तुत ग्रन्थ में भगवान के धाम व लीला दोनों ही अपार है।

धाम के आवरणों में अनन्त वैकुण्ठ व लीला प्रसंगों में अनन्त अवतारों का सखी रूप होकर श्री राम रास में उपस्थित होना है।

इस ग्रन्थ में कही गई सभी बातें यद्यपि अन्य शास्त्रों में भी वर्णन हैं परन्तु इस ग्रन्थ में जितना साफ २ है यह देख कर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई इसी से मैंने अपने वृत्ति के अनुसार रुपये पैसे का कुछ भी व्यवहार तथा बन्धान न होने पर भी छपाने की कोशिश की तो जैसे तैसे काम हो भी गया।

यह प्राचीन ग्रन्थ ऋषिप्रणीत है आधुनिक मनोकल्पित ग्रन्थों से बिलकुल अलग है इस ग्रन्थ का संस्कृत व साहित्य स्वयं इसका परिचायक है। इस ग्रन्थ में तीन ग्रन्थों के टुकड़े २ मात्र है एक वशिष्ठ संहिता— जिसमें श्री वशिष्ठ भरद्वाज सम्बाद के रूप में भगवत धाम का सुन्दर वर्णन है। दूसरा अगस्त्य संहिता है जिसमें श्री हनुमान अगस्त्य सम्बाद के रूप में श्री रामरास का वर्णन है तथा दूसरा शिव पार्वती सम्बाद रूप में श्री चारुशीलादि अष्ट महा-यूथेश्वरियों का अवतार व पूजा प्रसंग वर्णन है। तीसरा श्री सर्वे-श्वरी जू का श्री लक्ष्मी जी द्वारा की हुई स्तुति है जो कि बृहद्ब्रह्म रामायण चित्रकूट खण्ड का है। श्री अगस्त संहिता पृष्ठ ४० श्लोक संख्या ११० में श्री हनुमान जी ने अपना निजी स्वरूप श्री चारु-शीला जी के रास की बहुत बड़ी महिमा रक्खी है जिसमें श्रीजानकी जी स्वयं श्री राम रूप होकर तथा श्री राम जी श्री जानकी जी के रूप होकर रास किये।

यह ग्रन्थ मुझे जैपुर मन्दिर से मय टीका के प्राप्त हुआ है वर्तमान श्री महन्त जी से प्राप्त करके एक बार मैंने इस ग्रन्थ को

प्राइवेट पढ़ा था फिर मैंने इस ग्रन्थ की एकान्तिकी सन्त समाज के मध्य में कथा भी कही है फिर सब सन्तों की रुचि जान कर इसको छपा भी दिया है।

इस ग्रन्थ में श्रीराम रास का प्रसंग वर्णन है यद्यपि मर्य्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी की अवतार लीला समान्य धर्म मर्य्यादा की प्रतिष्ठा के लिये है ऐसा ही ऋषियों ने लिखा है परन्तु श्रीराम स्वतन्त्र भगवान हैं यह बात किसी ने छिपाया भी नहीं है भगवत स्वतन्त्रता तथा धर्म मर्य्यादा परतन्त्रता ये दोनों बातें जैसे श्रीराम अवतार में प्रकाशित हुये हैं ऐसा अन्य कोई अवतार से हो ही नहीं सका है, कहनी करनी फरक अवतारों में भी अन्यों में दीख पड़ा है परन्तु श्री रामावतार की अद्भुतता यही है कि स्वतन्त्रता तथा परतन्त्रता दोनों बातें बड़ी गम्भीरता से दिखा दी गई हैं यह स्वतन्त्र श्री राम जी की भगवत्ता है। वेदों में परात्पर ब्रह्म द्विभुज है जैसे कि यजुर्वेद अध्याय ३१ में:—

मुखं किमस्यासीत् किम्बाहू किमूरू पादा वुच्यते ॥१०

अर्थात् एक श्रुति ने प्रश्न किया कि यदि वह परात्पर ब्रह्म विराट् रूप होगया तो तब उस परमात्मा का एक मुख जो था स क्या होगया और दो भुजायें थी सो क्या होगई दो उरू दो चरण थे सो क्या हो गये ? इस श्रुति का उत्तर देते हुये दूसरी श्रुति कहती है कि :—

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥११॥

उस परात्पर ब्रह्म का एक जो मुख है उससे विराट के हजारों मुख ब्राह्मण रूप में हो गये तथा उस परात्पर ब्रह्म के दो भुजा जो हैं सो विराट के दो भुजा क्षत्रिय रूप में हो गये उस परात्पर ब्रह्म के दो उरू दो चरण हैं सो विराट के जंघा और पैरों के रूप में वैश्य और शूद्र हो गये —इस प्रकार से वह विराट उन परात्पर

ब्रह्म से पैदा हुआ है अब इसी प्रकार यही बातें बृहद्ब्रह्म संहिता में भी वर्णन हैं प्रथम पाद अध्याय १३ में —

नमुक्तो नापि नित्यस्तु जीवादन्यः परः पुमान् ।
द्वि हस्तं ह्येकवक्त्रं च शुद्ध स्फटिक सन्निभम् ॥६६

मुक्त और नित्य पार्षदों से परे परात्पर पुरुष परमात्मा दो हाथ एक मुख वाले निश्चय करके करोड़ों सूर्यों सदृश प्रकाशमान हैं

सहस्त्र कोटि वह्नीन्दुलक्ष्य कोट्यर्क सन्निभम् ।
पीताम्बर धरं सौम्य रूप माद्यमिदं हरेः ॥६७॥
ध्यानैक साधनं ध्येयं योगिभि र्हृदयाम्बुजे ।

हजारों करोड़ अग्नी व चन्द्रमा लाखों करोड़ सूर्यों के सदृश प्रकाशमान सुन्दर सुकुमार वे परमात्मा पीताम्वरादि से शोभायमान स्याम श्रीविग्रह ये भगवान के समस्त रूपों में आदि रूप हैं जो कि योगियों द्वारा हृदय कमल में केवल ध्यान मात्र से प्राप्त होने योग्य ध्येय परात्पर ब्रह्म हैं। बृ० ब्र० पाद १ अ० १३

रामेति किल वर्णाभ्यां ब्रह्मेति प्रतिपाद्यते ।
कारणं सर्वभूताना मवधि परिकथ्यते ॥७॥

र और म केवल ये दो वर्णों से ब्रह्म का प्रतिपादन होता है जो सर्व भूतों के कारणों की परम अवधि हैं ऐसे वेदों में कहा गया है। बृ० ब्र० पाद २ अ० ७ —

वासुदेवादि मूर्तीनां चतुर्णां कारणं परम् ।
चतुर्विंशति मूर्तीनां श्रीरामः शरणंमम ॥२६॥

वासुदेवादि चतुर्व्यूहों के तथा चौवीश अवतारों के परम कारण श्री राम जी के मैं शरण हूँ। ऐसा श्री विष्णु भगवान ने श्री महालक्ष्मी जी को उपदेश दिया है।

ब्रह्म की चार पाद विभूती बृहद्० सं० पा० १ अ० १३

प्रद्युम्न शंकर्षणक वासुदेवा इति त्रयः ।

त्रिपाद्विभूति राख्याता अमृता मुक्ति सेतवः ।।१४६

प्रद्युम्न शंकर्षण वासुदेव ये तीनों त्रिपाद विभूती कहे जाते हैं जो कि ये तीनों अमृत और मोक्ष मार्ग भी हैं। वहींपर—

कुमुदाद्यैश्च भूतेशाः सर्वैः परिषदैः सह ।
पादतश्चानिरुद्धस्य सम्भूता न्सहस्रशः ।।१४५।।
सहस्रशीर्ष चरण हस्त नेत्राद्भुता कृतेः ।
अनिरुद्धाज्जग ज्जज्ञे स्वाङ्ग देव यथाक्रमम ।।१४६।।

सपरिकर समस्त कुमुदादि भूतेश, एक पाद विभूती स्वरूप अनिरुद्ध से ही हजारों की संख्या में उत्पन्न हुये ।।१४५।।

हजारों शिर पैर हाथ नेत्र अद्भुत आकृती वाले अनिरुद्ध से प्रत्येक अङ्गों से क्रमशः समस्त जगत उत्पन्न हुआ ।।१४६।।

इनचारों महाविभूतियोंका नेता परात्परब्रह्म और है-बृहद्ब्र.पा.२अ.२

महाविभूति नेतारं निर्गुणं प्रकृतेः परम् ।
स्वरूपमिद मेवैकं मम नित्य मकर्मकम् ।८६।।
ज्ञान भक्त्यैक सम्प्राप्यं मद्विलास निकेतम् ।
परमैकान्तिनां प्राप्यं सत्व द्रव्य मयंपरम् ।।६०।।

इन चारों पाद स्वरूप महाविभूतियों के नियामक निर्गुण अप्राकृतिक सत्व द्रव्य मय परात्पर सर्व अवतारों के मूल कारण एक पुरुष श्रीराम हैं सर्व अवतारों का मुख्य विलास निकेतन केवल ज्ञान भक्ति द्वारा ही परम एकान्तिकीय भक्तों से प्राप्य है ।।८६-६०।।

श्रीराममन्त्रराजस्य माहात्म्यं गिरिजापतिः ।
जानातिभगवन् शम्भुर्ज्वलत्पावक लोचनः।।४ बृ.ब्र.पा.२अ.७

श्री राम मन्त्रराज का महात्म यथार्थ केवल श्री गिरिजापति शम्भु जी ही जानते हैं। जिसे जानने के प्रभाव से श्री शंकर जी ज्वालामाल अग्निमय नेत्र वाले तथा भगवान हो गये हैं। अब कहां तक कहा जाय जै श्री सीताराम जी की ।।

मुख्य अष्ट पार्षद

श्री सीताराम युगल पार्षदों में मुख्यतया आठ पार्षदों का नाम अधिक करके शास्त्रों में मिलता है जैसे कि श्री मद्वालमीकीय रामायण में तो श्री लक्ष्मण भरत सत्रुघ्न सुग्रीव विभीषण जाम्बवान अंगद हनुमान ये आठ प्रसिद्ध ही हैं। इसके अलावा श्री मद्भागवत में भी स्कन्ध ९ अध्याय १० में—

रामो लक्ष्मण सीताभ्यां विप्रेभ्यो येऽर्हं सत्तमाः।
तेभ्यः स्वयं नमश्चक्रे प्रजाभिश्च नमस्कृतः॥
पादुके भारतोगृह्य चामर व्यजनोत्तमे।
बिभीषणः सुग्रीवः श्वेतच् छत्रं मरुत्सुतः॥४३॥
धनुर्निषङ्गा च्छत्रुघ्नः सीता तीर्थ कमण्डलुम्।
अबिभ्रदङ्गदः खड्गं हेमं चर्म र्क्षराण् नृप॥४४॥

अर्थात् श्री सीता लक्ष्मण सहित श्री राम जी के बन से लौट आने पर नगर प्रवेश के समय श्री भरत जी चरण पादुका और चँवर श्री विभीषण जी व्यजन सुग्रीव जी श्वेत छत्र श्री हनुमान जी तथा धनुष तूणीर सत्रुघ्न जी तथा श्री सीता जी का जो तीर्था चरण कमण्डलु है उसको श्री अंगद जी, तरबार और ढाल को जाम्बवान जी धारण किये यहीं लिखा है। और श्री परासर रचित विष्णु पुराण में भी अंश ४ अध्याय ४ श्लोक ९९ में लिखा है—

लक्ष्मण भरत सत्रुघ्न बिभीषण सुग्रीवाङ्गद जाम्बवद्धनुमत प्रभृतिभिः
समुत्फुल्ल वदनैश्छत्र। चामरादि युतैः सेव्यमानो दाशरथिः॥

तथा इसी प्रकार आनन्द रामायण-आरम्भ में ही प्रथम श्लोक-

वामे भूमिसुता पुरस्तु हनुमान् पृष्टे सुमित्रा सुतः।
सत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्व दलयो र्वाय्वादि कोणेषु च॥
सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारासुतो जाम्बवान्।
मध्ये नील सरोज कोमल रुचिं रामं भजे श्यामलम्॥१॥

इसी प्रकार श्री रामस्तवराज अध्यात्म रामायणादि सभी शास्त्रों में प्रसिद्ध है कि ८ पार्षद मुख्य हैं। और भगवान के पार्षद सभी प्रकार के रूप धरने में भी स्वतन्त्र होते हैं जैसा कि श्री वृहद्ब्रह्म संहिता में प्रथम पाद द्वितीयाध्याय श्लोक ४०-४१ में लिखा है— शुद्ध सत्वात्मकाः शान्ताः स्वानन्दाबृत मानसाः।

एकेन वपुषा विष्णोः पाद पद्मोपसेविनः॥

इतरेणैव वपुषा कुर्वन्ति परमं तपः।

अर्थात भगवत पार्षद एक रूप से तो भगवत चरणारविन्दों की सेवा करते हैं और दूसरे रूप से संसार के जीवों के उद्धारार्थ परम् तप करते हैं। इसी प्रकार श्री हनुमान जी के लिये भी इसी बृ॰ ब्रह्म॰ पाद ३ अध्याय १ श्लोक १०२ में लिखा है कि—

तथा किम्पुरुषोऽयम्वै हनुमान्नामतो वली।

महाशम्भुरिति ख्यातो राम रूप मुपाश्रितः॥१०२॥

श्री विष्णु भगवान ने ब्रह्मा जी से कहा कि हे ब्रह्मा ये जो आप की सृष्टि के अन्दर किम्पुरुष खण्ड में निवाश करने वाले महाबलवान श्री हनुमान नाम से प्रसिद्ध हैं ये वही महाशिव हैं जो श्री राम रूप के अंग तेज स्वरूप हैं। जिनका वर्णन अन्य शास्त्रों में भी इस प्रकार आता है कि—

राघवस्य गुणो दिव्यो महाविष्णु स्स्वरूपवान्।

वासुदेवो घनीभूतो तनु तेजो महाशिवः॥

अर्थात श्री राघव जी के दिव्य गुण (सर्व गुणों में शिरमौर भाग्य गुण) श्री महाविष्णु के रूप होकर रहते हैं तथा श्री राम रूप की अंग स्यामता वासुदेव होकर मूर्तीमान रहते हैं उसी प्रकार श्री राम अंग तेज महाशिव रूप होकर श्री राम भजन करते हैं॥१०२॥ यही महाशिव शंकर्षण स्वरूप है—

शंकर्षण समुद्भूतो महाशम्भुश्च शाश्वतः।

अंशो भगवतः साक्षात् शुद्ध सत्व बपुर्धरः॥१०३॥

ये महाशम्भु उन्ही शंकर्षण से उत्पन्न हैं कि जो भगवान श्रीराम जी के अंश शुद्ध सच्चिदानन्द (त्रिपाद विभूतिस्थ) रूपवान हैं।।१०३ जो कि वासुदेवादि चतुर्व्यूहों के कारण भूत श्री राम जी के अंग तेज स्वरूप महाशम्भू यही श्री हनुमान जी हैं—

श्रीराम मन्त्र तत्वज्ञः श्रीरामानुचरो बली।
नित्यो महा विभूतिस्थ ईशान्यां दिशि संस्थितः ।।१०४।।

ये श्री हनुमान जी श्री राम मन्त्र के यथार्थ तत्व ज्ञाता हैं और उसी तत्व ज्ञानानुसार श्री राम अनुचरों पार्षदों में तथा आत्म तत्वज्ञों में सर्व श्रेष्ठ बलवान हैं और सर्व वैकुण्ठों का आदि कारण नित्यपरात्पर श्री साकेत धाम के ईशान दिशा में निवास करते हैं ।।१०४।।

मामनन्य तया ब्रह्मन्नुपास्ते प्रेम लम्पटः।
महानन्दैक भुक् श्रीमान्महाशक्ति समाश्रयः ।।१०५।।

हे ब्रह्मा मेरा जो परापर श्री राम रूप है उनके श्री हनुमान जी अनन्य होकर उपासना करते हैं इनका उपासना क्रम यह है कि श्री राम जी की महाशक्ति श्री सीता जी हैं उन श्री सीता जी की कृपा से उनके समानता को प्राप्त होकर श्री चारुशीला जी श्री सीताराम अनन्त रमणी समाज में श्रीमानता (सर्वेश्वरी पदवी) को प्राप्त हो करके महाप्रेम लम्पटा होकर महा आनन्द का भोग करते हैं ।।१०५।।

इसी शास्त्र के अधार पर श्री रामानन्दाचार्य महाराज के कृपा पात्र श्री अनन्तानन्दाचर्य महाराज का यह प्रत्यक्ष अनुभव है कि—रसिक प्र० भक्त० रामानन्द स्वामी जू के शिष्य श्री अनन्ता-नन्द शीतल सुचन्दन से भक्तनअनन्द कर। सन्तन के मानद परा-नन्द मगन मन मानसी स्वरूप छबि सरसी मरालवर। जनकलली की कृपा पात्र चारुशीला अली रूप में अभिन्न भुञ्जै रंग भूमि लीला पर। उपर समाधि उर अमित अगाध नैन अंसुवा श्रवत उमगल

मानो सुधासर ॥६५॥ — इस कवित्त में जनक लली जी की मुख्य कृपा जिनके जरिये होती है वे श्री चारुशीला जी श्री जनक ललि जी से रूप में अभिन्न हैं और भोग में भी अभिन्नता पूर्वक समस्त रंगभूमि स्थसमाज की सर्वेश्वरी पदस्थिता हैं।

स एव शिव रूपेण शं तनोति चतुमुर्खं।
अनन्यो पासनं लेके सात्विकं प्रतिपादयन् ॥१०६॥

वही श्री हनुमान जी तीसर पाद विभूतिस्थ महाशिव हो करके श्री सीताराम चतुष्पाद विभूतियों में तथा एक पाद के करोणों ब्राह्माण्डों में सर्वत्र श्री राम मन्त्र की उपासना देकर कल्याण का विस्तार करते हैं तथा उपासना भाव के अन्दर उद्दीपन पैदा करके शुद्ध सच्चिदानन्द सत्व का भक्त के भाव में प्रकाश विस्तार करते हैं ॥१०६॥

श्रीविष्णु पार्षद वरो विष्णु वेष धरोऽव्ययः।
चतुर्भुजो महोत्साहो महादेवो महेश्वरः ॥१०७॥

ये श्री हनुमान जी परात्पर ब्रह्म श्री सीताराम जी के ऐश्वर्य व माधूर्य लीलाओं में सर्व श्रेष्ठ पार्षद हैं कभी २ श्री युगल सरकार के रुचि अनुसार श्री हनूमान जी अव्यय विष्णु का वेष भी धारण करते हैं वही अव्यय विष्णु से चतुर्भुज विष्णु तथा महान उत्साह और महादेव महेश्वर भी उत्पन्न होते हैं ॥१०७॥

सचाऽऽत्मानं द्विधा कृत्वा प्राकृतेऽप्राकृते स्थितः।
रुद्र रूपेण संजातो ब्रह्मणो भृकुटी तटात ॥१०८॥

ये श्री हनुमान जी अपने दो रूपों को बनाकर एक रूप से दिव्य धामों में तथा दूसरे रूप से प्रकृति मण्डल के हरेक ब्रह्माण्डों में हमेशा किम्पुरुष नामक स्थान पर निवास करते हैं तथा एक रूप से महारुद्र रूप ब्रह्मा जी के भृकुटी से उत्पन्न होते हैं ॥१०८॥

सचैकादशधाऽऽत्मानं व्यतनोद्भीम दर्शनः।
रुद्रः कल्पान्त कर्ताऽयं तामस स्तामसप्रियः ॥१०६॥

वह ब्रह्मा के भृकुटी से उत्पन्न भयंकर रुद्र ग्यारह रूप होकर अन्त में विश्व का महाप्रलय कर देते हैं। इस प्रकार ये तामसप्रिय तमोगुणी रुद्र भी श्री हनुमान जी से उत्पन्न होते हैं ॥१०६॥

वेदों में श्री हनुमान जी चारुशीला जी हैं। (ऋग्यवेद ५।३।३

तवश्रिये मरुतो मर्जयन्त रुद्रयत्ते जनिम चारु चित्रम्।
पदं यद्विष्णो रूपमं निधायि तेन पासि गुह्यं नामगोनाम् ॥

एतस्य रामस्य मुख्य मुपासकं हनुमन्तं स्तुवन्ति

श्री राम जी के मुख्य उपासक श्री हनुमान जी की देवता लोग अस्तुति करते हैं हे रुद्र हे हनुमन् तवश्रिये त्वदधिगत संपत्प्राप्त्यर्थं राम विद्या वाप्त्यर्थं। हे हनुमान जी आपको प्राप्त जो श्री राम विद्या रूप सम्पत्ति है उसकी प्राप्ती के लिये। मरुतोदेवाः मर्जयन्त शोधयन्ति तपोध्याना दिनात्मानं। देवतागण तपस्या ध्यानादि द्वारा अपनी आत्मा को शुद्ध करके खोज करते हैं यत् यतस्ते तव जनिम जन्म। वह राम विद्या जिनसे प्राप्त होगा वे आप हैं अर्थात आपही से राम विद्या प्राप्त हो शक्ती है अतः आपका माधुर्यमय जन्म का नाम -- चारु चित्रम्—रम्यं चरित्रं पवित्रं शीलं यस्या सा चारुशीला।

चारु रम्यम् चित्रम्-इति चित्रभानुत्वाच्चित्रो अग्निः रेफः सोऽस्या मस्तीति चित्रा सस्वर शब्दवतीं रमणशीलत्वात् रामः तत्सहित रमणत्वं यस्यां सा चारुशीला ॥ इति ॥ बिस्तार भयात् अपर अर्थम् मन्त्र रामायणे नीलकण्ठी टीकायां द्रष्टव्यम्।

इसी अर्थ का पोषक दूसरा मन्त्र यह है कि—

अवीरा मिव मामयं शरारु रभिमन्यते। उताह मस्मि वीरिणीन्द्रपत्नी मरुत्सखा विश्वस्मा दिन्द्र उत्तरः ॥ ऋग्वेद १०-८६-७

श्री सीता जी हनुमान जी से बोली कि—

हे वायु पुत्र ! मैं तुम्हारी सखी हूँ। मरुत् सखा = मरुतः

सखी इस विग्रह में षष्ठी तत्पुरुष समास होने से राजाहः सखिभ्यष्टच्, इस पाणनीय सूत्र सेटच् प्रत्यय होता है और 'टी' का लोप होता है उसके बाद अजादि गण में पाठ होने से मरुत्सख शब्द से अजाद्यतष्टाप् इस सूत्र से टाप् प्रत्यय होने से मरुत्सखा शब्द सिद्ध होता है। मरुत शब्द से मरुत सुत का ग्रहण होने में नामैक देशेन नाम मात्र स्यापि ग्रहणं भवति ऐसा न्याय है। (भावार्थ श्री किशोरी जी कहती हैं मेरे पति श्री राम जी हैं और श्री वायु पुत्र हनुमान जी तुम मेरी सखी हो। हमारे पतिदेव श्रीराम जी ही सारे संसार से श्रेष्ठ सर्वैश्वर्य सम्पन्न हैं अतः हमें दुख देने वाला यह रावण अवश्य मरेगा ॥

श्री हनुमान जी बोले कि--- दम्पति के पूर्णाङ्ग में एक अर्धाङ्ग आप हैं दूसरा अर्धाङ्ग श्री राम जी उस पार में हैं अतः सब देवताओं (पार्षदों) के परम प्रिय तीसरा में (चारुशीला) चाहती हूं कि आप दोनों अर्धाङ्ग एकत्रित हो जावें जिसमें हम सब आपके पार्षदगण पूर्णांग की सेवा करके कृत कृत्य हो जावें।

इसी प्रकार हनुमत संहिता अ० १ में भी श्री अगस्त्य जी ने श्री हनुमान जी से कहा है कि--

त्वं साक्षा चारुशीला च नित्यामध्ये प्रपूजिता ॥८॥

हे हनुमान आप नित्य सखिगणों से प्रधान पूजिता श्री चारुशीला नाम के श्री सीता सखी हो श्री हनुमान जी का चारुशीला नाम और भी बहुत प्रसिद्ध है। जैसे कि श्रीकील्ह स्वामी परम्परा में श्रीमधुराचार्य की वाणी-माधुर्य के० सा श्री प्रसादा

जनकात्मजाया सखी च रामस्य च चारुशीला।
चक्रे ममवाल क्यजनं विनोदात सतन दत्तं शुभगं सुरम्यम ॥१८५॥

इसी प्रकार श्री कृपा निवाश जु को श्री हनुमान जी प्रत्यक्ष

दर्शन दिये। रसि०प्र०भ० रही कछु वासना उपासना की दृढ़ता में करतहि ध्यान प्रगटे हैं हनुमानजू। श्री प्रसाद रूप निज अलख लखायो उरताप को मिटायो जन जानिकै नदानजू। कनकभवन को स्वरूप दर्शायो यथा मिथिला में तैसोई अवध परमानजू। इष्ट के मिलायवे में हमही को गुरू मानो आलिन युत्थ चारुशीला हैं प्रधान जू ॥१८४॥— इसी प्रकार श्री राम प्रसादाचार्य श्रीराम सखे जी श्री रामचरण दास। (करुणासिन्धु) जी आदि सभी आचार्यों की वाणी प्रसिद्ध है। इसी प्रकार प्रधान आठों पार्षदों का भी युगल सरकार की सेवा में उभयरूप हुआ करता है।

श्री सीताराम जी के मुख्य अष्ट पार्षद

जै मिथिलाधिप नन्दनी जै अवधेश किशोर।
जैति चारुशीला अली सकल सखिन शिरमोर ॥१॥
जै जै जै हनुमान श्री श्रीप्रसाद अवतार।
चारुशिला सर्वेश्वरी तीनरूप निजधार ॥२॥
जै श्री शुभगा भरत तन सेवा समय सुधार।
महाविष्णु अवतार महि सनक सुशीला चार ॥३॥
जै विमला अरु लक्ष्मणा लक्ष्मणरूपहु धार।
नारायण पुनि शेषतन सेवा समय विचार ॥४॥
जै हेमा श्री रिपुदवन तीन रूप सुखसार।
दम्पति सेवा सुरुख लखि भौमा सुक मुनि धार ॥५॥
सूर्य अंश सुग्रीव शिव शंकर्षण अवतार।
जै अतिशीला प्यारि पिय सु वरारोहा धार ॥६॥
जैति विभीषण भीषणा विश्वमोहिनी शक्ति।
पद्म सुगन्धा लाड़िली लाल प्रियावर शक्ति ॥७॥
भूशक्ती भूधरण की सुलोचना सिय प्यारि।

जैति जृम्भणा हरिप्रिया जाम्बवान तनुधारि ॥८॥
जयति क्षमावति क्षेमदा क्षेमा क्षमावतार ।
अंगद विद्या बारिधर वागीशावर चार ॥९॥
वसु पारषद रसालहिय रसिकन आँख सुचार ।
लखै लखावत लाख लख अक्ष आँख अधिकार ॥१०॥
इति

स्पष्टी करण

श्री सीताराम अष्ट मुख्य पार्षदों का श्री सीताराम जी के दिव्य गुणों का रूप साक्षात मूर्तिमान जिस प्रकार शास्त्रों में वर्णन है उसी प्रकार एक २ पार्षद के बहुत रूप धारण करने का भी वर्णन है जैसे कि श्री मद्वालमीकीय सुन्दर काण्ड ३५ सर्ग में—

अहमेकस्तु संप्राप्तः सुग्रीव बचनादिह ॥७५॥
मयेयमस हायेन चरता कामरूपिणा ।
दक्षिणा दिगनुक्रान्ता त्वन्मार्ग बिचयैषिणा ॥७६॥

अर्थात् श्री हनुमान जी कहते हैं कि हे श्री जानकी जी सुग्रीव जी के कहने पर एक में ही आप के पास पहुँचा हूं, मैंने बिना किसी के सहायता के ही इस दक्षिण दिशा का अनुक्रमण करते हुये बहुत रूप धारण करके आपको खोजा है, मैं इच्छामय रूप धारण कर शक्ता हूं ।

इसी प्रकार बाल्मी० बालकाण्ड सर्ग १८ श्लोक १३ के अर्थ करते हुये श्री शिरोमणि टीकाकार लिखते हैं कि—

वैकुण्ठेशस्तु भरतः क्षीराब्धीशश्च लक्ष्मणः ।
शत्रुघ्नस्तु स्वयंभूमा रामसेवार्थ मागताः ॥

इति नारद पञ्च रात्रवचनम् । अर्थात वैकुण्ठेश भगवान भरत हुये क्षीराब्धीश नारायण लक्ष्मण हुये भौमा नारायण

सन्नुघ्न हुये। ऐसे ही सभी पार्षद बहुत रूप धारण करके श्री सीताराम जी की सेवा करते हैं। यद्यपि श्री सीताराम जी के अनन्त पार्षद हैं, परन्तु आठ सोलह बत्तीस चौशठि ये ही मुख्य हैं. समय २ पर ये ही लोग बहुत रूप धारण करते हैं।

जैसे कि श्री सीताराम जी का सौभाग्य गुण श्री शुभगा नाम की सखी हैं वह शुभगा समय २ पर श्री महाविष्णु, वैकुण्ठेश, भरत, सनक जी ऐसे रूपों को धारण करके श्री सीताराम चारपाद विभूती का अनन्त कार्य सिद्ध करती हैं, उसी प्रकार श्री राम अंग दिव्य लक्षण गुण लक्ष्मणा सखी के रूप से नारायण शेष लक्ष्मण जी आदि बहुत रूप धारण कर सेवा करती हैं। इसी तरह से अन्य सखी सब में भी श्री सीताराम दोनों सरकारों के होली द्यूतादि लीलाओं के समय २ पर ८+१६+३२+६४ ये जो मुख्य पार्षद हैं सो दो दो रूप होकर दोनों पक्षों में बट जाते हैं। यह अद्भुत श्री सीताराम चरित्र है जिसको श्री हनुमान जी, शिव, वाल्मीकी, अगस्त कागभुशुण्डी जी आदि जानते हैं।

अति विचित्र रघुपति चरित जानहि परम सुजान।
जो मति मन्द विमोह वश हृदय धरहि कछु आन॥

जै श्री सीताराम जी की।

❋ भगवान की भगवत्ता ❋

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य वीर्य्यस्य यशशा श्रिया।
ज्ञान वैराग्ययो श्चैव षण्णां भग इतीरितः॥

उत्पत्तिं प्रलयञ्चैव भूताना मगतिं गतिम्।
वेत्ति विद्या मविद्याञ्च सवाच्यो भगवान्निति॥

ऐश्वर्य्येण च धर्मेण समत्व श्रियमेवच।
वैराग्य मोक्ष षट् कोणैः सञ्जातो भगवान्हरिः॥

पोषणं भरणा धारं शरण्यं सर्वव्यापकम्।
कारुण्यं षड्भिः पूर्णो रामस्तु भगवान स्वयम्॥

ज्ञान शक्ति बलैश्वर्य्य तेजो वीर्य्या ण्यशेषतः।
भगवच्छब्द वाच्यानि बिना हेयै र्गुणादिभिः॥

दिव्यानन्त गुणः श्रीमान् दिव्य मङ्गल विग्रहः।
षड् गुणैश्चर्य सम्पन्नो मनो वाचा मगोचरः॥

वेद वेद्यः सर्व साक्षी सर्वोपाश्रयः स्वतन्त्रकः।
नित्यानां निजभक्तानां भोग्यभूतः श्रियः पतिः॥

ब्रह्म विष्णु महेशानां कारणं सर्व व्यापकः।
मूलन्तु ह्यवताराणां धर्म संस्थापकः परः॥

द्विभुज श्चापभृच्चैव भक्ता भीष्ट प्रपूरकः।
वैदेही बल्लभो नित्यं कैशोर वयसि स्थितः॥
एम्भूलश्च ज्ञातव्यो रामोराजीव लोचनः।
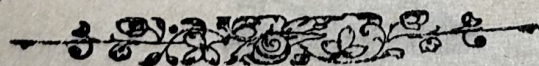
❀ श्री सीतारामचन्द्राभ्यां नमः ❀

❀ श्रीमती सर्वेश्वरी श्री चारुशीलायै नमः ❀

❀ श्रीमते हनुमते नमः श्रीमतेरामानन्दाय नमः ❀

❀ श्री वशिष्ठ संहिता ❀

(यह ग्रन्थ श्रीवशिष्ट संहितान्तरगत श्रीरामधाम नित्य स्वरूप वर्णन नाम के २६वें अध्याय से श्री वशिष्ट भरद्वाज सम्वाद रूप में वर्णन किया गया है।)

श्री भरद्वाज उवाचः—

वन्दे वेदान्त सारज्ञं विरञ्चि प्रभवोत्तम ॥

भवता य त्परिज्ञातं तन्न जानाति कश्चन ॥१॥

श्री भरद्वाज जी बोले कि श्री ब्रह्मा जी से उत्पन्न श्रेष्ठ वेदान्त के सार ज्ञाता जो वस्तु आप जानते हैं वह और कोई नहीं जानता ॥१॥

अतस्त्वां परि पृच्छामि हरे र्धाम्नां हि कारणम् ॥

कचित्तत्परमं धाम माधुर्य्यैश्वर्य भूषणम् ॥२॥

अतएव मैं आपसे विशेषतया पूछता हूँ कि सब धामों का कारण रूप सबसे परे वह कौन धाम है जो माधुर्य और ऐश्वर्य का भूषण है। अर्थात जिस धाम में ऐश्वर्य मिश्रित मधुर लीलाओं का समावेश हो सब धामों का कारण सब से परे हो ॥२॥

यत्र सर्वा वतारणा मादि कारण विग्रह ॥

कृतेऽपि कृपया मेत्वं तत्वतः कथय प्रभो ॥३॥

जहाँ पर सब अवतारों के आदि कारण परम दिव्य मंगल विग्रह रूप से परमात्मा विहार करते हैं, कृपा करके आप यथार्थ रूप से मुझ से वर्णन कीजिए ॥३॥

श्री बशिष्ठ उवाच

साधु पृष्टं त्वया तात गुह्या ग्दुह्य तमं महत् ॥
सारात्सारतमं वेद सिद्धान्तं प्रवदामिते ॥४॥

श्री बशिष्ठ जी बोले कि–हे तात आपका पूछना बहुत अच्छा है आपका पूछा हुआ रहस्य गुप्त से भी गुप्त श्रेष्ठ है। सारों का सार श्रेष्ट वेदों का सिद्धान्त मैं आपसे कहता हूँ ॥४॥

श्रूयतां सावधानेन रहस्य मपि दुर्ल्लभम् ॥
रामभक्तं विना क्वापि न वक्तव्यं त्वयानघ ॥५॥

सावधान होकर इस दुर्लभ रहस्य को सुनो हे निष्पाप आप बिना श्रीरामजी के भक्त के और किसी से कहने योग्य नहीं हो। अर्थात इस रहस्य को श्रीराम भक्त के सिवाय और से मत कहना ॥५॥

सर्वेभ्यश्चापि लोकेभ्य ऊर्द्ध्वं प्रकृतिमण्डलात् ॥
विरजायाः परेपारे बैकुण्ठं यत्परम्पदम् ॥६॥

सब लोकों से ऊपर प्रकृति से परे श्रीबिरजाजी के उस पार महा बैकुन्ठ है जो परम पद कहाता है ॥६॥

तस्मादुपरि गोलोकं सच्चिदिन्द्रिय गोचरम् ॥
तन्मध्येराम धामास्ति साकेतं यत्परात्परम् ॥७॥

उसके ऊपर सच्चिदानन्द स्वरूप दिव्य नेत्रों से प्राप्त गोलोक धाम है। जिसके बीच श्रीराम धाम साकेत है जो परात्पर धाम है ॥७

श्रीम द्वृन्दावनादीनि तद्धामावरणेष्वपि ॥
सर्वेषामवताराणां सन्ति धामान्यनेकशः ॥८॥

श्री बृन्दावनादिक दिव्य स्थल उस साकेत के आवरणों में है एवं सब अवतारों के धाम पृथक-२ अनेकों है ॥८॥

केवलैश्वर्य मुख्यानि धामान्येतानिमन्यते ॥
ऐश्वर्योपासकाभक्ता ध्यायन्ति प्राप्नुवन्ति च ॥ ९॥

इन धामों में केवल ऐश्वर्य ही प्रधान है अतः एव ऐश्वर्य के उपासक इन्हीं का ध्यान करते हैं और वे ही प्राप्त भी होते हैं ॥९॥

एभ्यः परतमंधाम श्रीरामस्य सनातनम् ॥
पृथिव्यां भारतेवर्षे अयोध्याख्यं सुदुर्ल्लभम् ॥ १०॥

श्री राम जी का परतम सनातन धाम पृथ्वी के अन्तर्गत भारतवर्ष में अयोध्या नाम से विख्यात है जो अत्यन्त दुर्लभ है अर्थात विरले भक्त ही उसे प्राप्त कर पाते हैं ॥१०॥

अखण्ड सच्चिदानन्द सन्दोहं परमाद्भुतम् ॥
वाङ् मनो गोचरातीतं त्रिषु कालेषु निश्चलम् ॥११॥

यह अयोध्या नित्य सच्चिदानन्द समूह परम अद्भुत मन वाणी से परे इन्द्रियों से परे भूत भविष्य वर्तमान तीनों में चलायमान नहीं है अर्थात महा प्रलय काल में भी इसका विद्यमान होना पाया जाता है ॥११॥

भूतलेप्यस्ति यद्धाम तथापिप्रकृतेर्गुणम् ॥
संस्पृसन्ति नतज्जातु जलानि कमलं यथा ॥१२॥

यद्यपि यह धाम पृथिवी तल पर है तथापि प्रकृती के गुण इसे स्पर्श नहीं करते हैं जैसे कमल के पत्तों को जल स्पर्श नहीं करता ॥१२॥

कालः कर्मस्वभावश्च मायिकः प्रलयस्तथा ॥
ऊर्मयः षड्विकाराश्च नयत्र प्रभवन्तिहि ॥१३॥

काल कर्म स्वभाव गुणभाग जनित पदार्थ प्रलयादि षड्उर्म्मि रूपी विकार वहां (उस अयोध्या में) नहीं उत्पन्न होते है ॥१३॥

यदंशेन प्रकाशन्ते विभूति द्वे सनातने ॥
अधश्चोर्द्ध मुपासन्ते नित्ये च परमाद्भुते ॥१४॥

जिस श्री अयोध्या के अंश से दो सनातन विभूतियां सगुण निर्गुण रूप से प्रकाशित होती हैं तथा नीचे और ऊपर नित्य परम आश्चर्य युक्त ब्रह्म स्वरूप मय सेवन किये जाते हैं ॥१४॥

विभाति सरयू यत्र पश्चिमादिशि तत्र हि ॥
विरजाद्या सरिच्छ्रेष्टा प्रकासन्ते यदंशतः ॥१५॥

जिस श्री अयोध्या जी में पश्चिम की ओर से श्री सरयू जी बहती हुई शोभित होती हैं जिसके अंश से विरजा आदि श्रेष्ट नदियां लोक में प्रकाशित हैं ॥१५॥

यस्यां स्नानेन पानेन दर्शनेन विना नरः ॥
श्रीरामं प्राप्नुयान्नैव ब्रह्म तुल्योभवेद्यदि ॥१६॥
परो नारायणश्चैव कृष्णा त्परतरा दपि ॥
योवै परतमः श्रीमान् रामो दाशरथिस्स्वराट ॥१७॥

जिसके दर्शन स्पर्शन पान किये विना श्रीराम जी को प्राप्त नहीं हो शक्ता हैं चाहे वह ब्रह्म के समान क्यों न हो ॥१६॥

पर स्वरूप स्वयं श्री नारायण एवं कृष्ण परतर अर्थात पर से परे स्वरूप साक्षात हैं किन्तु परतम रूप सबसे परे श्रीमान दशरथ पुत्र श्री राम जी ही हैं ॥१७॥

यस्या नन्ता वतारारश्च कलाश्चांशा विभूतयः ॥
आवेशा विष्णु ब्रह्मेशाः परं ब्रह्म स्वरूपभाः ॥१८॥

जिन श्रीराम जी के अनन्त अवतार कला अंश विभूती आवेश आदि परम्ब्रह्म स्वरूप विष्णु व ब्रह्मा शंकरजी प्रकाशितहैं।।१८

स एव सच्चिदानन्दो विभूति द्वय नायकः ॥
वात्सल्यादि प्रभूतानाँ कल्याण गुण वारिधिः।।१६।।

वे श्रीराम जी उपरोक्त दोनों सच्चिदानन्दमयी विभूतियों के स्वामी हैं और वात्सल्य सौशील्यादि कल्याण मयी गुणों के समुद्र हैं ।।१६।।

राजेन्द्र मुकुट पद्म रत्नानि राजिताङ्घ्रिणा ॥
पित्रा दशरथे नैव वात्सल्या मृत सिन्धुना ॥२०॥

जिनके चरणों को बड़े २ राजा महाराजा अपने स्वर्णमयी नाना पद्मरागादि मणियों जड़ित मुकुटों को धारण किये नत मस्तक होते हैं। ऐसे पिता श्री दशरथ जी वात्सल्यादि दिव्य अमृत मयी गुणों के समुद्र हैं ।।२०।।

कौशिल्या प्रमुखी भिश्च मातृभिर्भ्रातृभिस्त्रिभिः॥
सीतादि भिस्स्व दारैश्च दाशीभिश्चालिभिस्तथा।२१

श्री कौशिल्यादि प्रमुख मातायें व भरत लक्ष्मणादि भ्राता तथा श्री सीतादि निज स्त्रियायें एवं अनन्त दाशियां व सखियों के सहित ।।२१।।

सखिभिस्समरूपैश्च दासैश्चामित विक्रमैः॥
वशिष्ठादि मुनीन्द्रैश्च सुमन्त्रा द्यैश्चमन्त्रिभिः।।२२।।

समान सामर्थ्यमान सखा सखियां एवं अमित पराक्रम सम्पन्न दास दासी समूहों के सहित श्री वशिष्ट जी आदि मुनि वर्ग तथा मन्त्रियों सुमन्त्रादि सहित ।।२२।।

परिवारै रनेकैश्च सच्चिदानन्द मूर्त्तिभिः ॥
भोगैश्च विविधैर्दिव्यैर्भोगोपकरणैस्तथा ॥२३॥

इस प्रकार अनेकों परिवार सच्चिदानन्द रूपसे दिव्य नाना भांति के भोग सामग्री व उपकरणों सहित ॥२३॥

सार्द्धं वसति यत्रैव स्वतन्त्रः क्रीडते सदा ॥
क्षणंहित्वा न तद्धाम क्वचिद्याति स्वयंप्रभुः ॥२४॥

उक्त सब साहित्य समाज के सहित श्रीराम जी स्वतन्त्र सदैव क्रीड़ा करते हैं क्षणमात्र भी उस धाम को छोड़ कर कहीं भी नहीं जाते क्यों कि वे स्वयं प्रभु हैं ॥२४॥

तन्माधूर्य्यं मयं नित्य मैश्वर्य्यान्तर्गतं ध्रुवम् ॥
रामस्याति प्रियंधाम नास्त्यनेन समं क्वचित् ॥२५॥

वह नित्य माधूर्य मयी जिसके अन्तर्गत निश्चय करके ऐश्वर्य विद्यमान है। श्रीरामजी का अत्यन्त प्रिय धाम है। जिसके समान कहीं कोई धाम नहीं है ॥२५॥

अतोऽयोध्यां रसज्ञाये सर्वदा पर्युपासते ॥
देहान्ते सच्चिदानन्द रूपास्तां प्राप्नु वन्तिते ॥२६॥

इससे जो रसज्ञ भक्त जन सदैव श्री अयोध्या जी की उपासना करते हैं वे देह त्याग के अनन्तर सच्चिदानन्द स्वरूप उस अयोध्या जी को प्राप्त करते हैं ॥२६॥

प्राकृतैश्चक्षुभिर्नैव दृश्यते सा कथञ्चन ॥
सदैक रस रूपायाऽयोध्या भूमौ प्रकाशते ॥२७॥

वह अयोध्या प्राकृतिक नेत्रों को कभी नहीं देख पड़ती है वह सदैव एक रस रूप से भूमण्डल पर प्रकाशित है ॥२७॥

देहत्रय विनिर्मुक्ता रामभक्ति प्रभावत ॥
तुरीय सच्चिदानन्द रूपाः पश्यन्ति तां पुरीम् ॥२८॥

जो ज्ञानी पुरुष स्थूल सूक्ष्म कारण तीनों शरीरों से रहित तुरीयावस्था को प्राप्त है सच्चिदानन्द रूप वाली उस पुरी को श्रीरामभक्ति के प्रभाव से देखते हैं ॥२८॥

अथ श्रीरामचन्द्रस्य यद्धाम प्रकृतेः परम् ॥
सच्चिद्‌घन परानन्दं नित्यं साकेत संज्ञिकम् ॥२६॥

इस प्रकार प्रकृति से परे सतचित घनपरानन्द स्वरूप नित्य जो श्रीरामचन्द्र जी का धाम है उसे साकेत कहते हैं ॥२६॥

यदंश वैभवा लोका वैकुण्ठाद्या स्सनातनाः ॥
सप्तावर्णानि तस्याहं वच्मि मुनि सत्तम ॥३०॥

जिस साकेत के अंश से ऐश्वर्य सम्पन्न सनातन वैकुण्ठादि लोक हैं, हे मुनि श्रेष्ठ उस साकेत के सप्तावरणों का मैं वर्णन करता हूं ॥३०॥

एकैकस्यां दिशि श्रीमान् दशयोजन सम्मितः ॥
अयोध्यायाः बहि र्देशो सवै गोलोकसंज्ञिकः ॥३१॥

श्री अयोध्या (साकेत) के बाहरी घेरा में चारों ओर प्रति दिशा में दस २ योजन की भूमि है उसी को गोलोक कहते हैं ॥३१॥

महाशम्भुर्महाब्रह्मा महेन्द्रो वरुणस्तथा ॥
धनदोधर्मराजश्च महान्तश्च दिगीश्वराः ॥३२॥

सप्तावर्णों में से प्रथम• महासम्भू महाब्रह्मा महापद से विभूषित महेन्द्र कुबेर धर्मराजदि दिग्पाल देवता ये सब प्रथम आवरण में निवास करते हैं ॥३२॥

त्रय स्त्रिंशत्तथा देवागन्धर्वाश्चाप्सरोगणाः ॥
अन्येच विविधो देवा नित्या स्सर्वे द्विजोत्तम ॥३३॥

(बारह आदित्य ग्यारह रुद्र आठ वसु एक इन्द्र एक प्रजापति तथा गन्धर्व अप्सरागण और अन्य नाना प्रकार के देवतागण तैंतीस करोड़ की संख्या में तथा और भी हे द्विजोत्तम भरद्वाज जी उस दिव्य साकेत में नित्य निवास करते हैं ॥३३॥

सप्तर्षयो मुनीन्द्राश्च नारद स्सनकादयः ॥
वेदा मूर्तिधराश्शास्त्रा विद्याश्च विविधास्तथा ॥३४॥

तथा सप्तर्षि नारद सनकादिक श्रेष्ठ मुनिगण मूर्तिमान वेद शास्त्र और नाना भांति की विद्यायें ॥३५॥

सायुधा स्सगणा श्रीमद्रामे भक्ति परायणाः ॥
प्रथमावरणे नित्यं साकेतस्य स्थितामुने ॥३५॥

हे मुनि श्री भरद्वाज जी इस प्रकार उस नित्य साकेत के प्रथमा वरण में उपरोक्त समस्त अपने २ साहित्य समाज आयुधों और ऐश्वर्यादि सहित श्री सीताराम जी की भक्ति परायण हुये नित्य निवास करते हैं ॥३५॥

एतदंश समुद्भूतादेवा ब्रह्म शिवादयः ॥
यथाधिकारं ते सर्वेस्व स्वलोकेषु संस्थिताः ॥३६॥

(अथ दूसरा आवरण) उपरोक्त सब परम दिव्य स्वरूपों से श्री ब्रह्मा शिवादिक देवतागण अपने २ अधिकार को प्राप्त किये हुये वे सब अपने २ लोकों में अवस्थित रहते हैं ॥३६॥

निधयो नवधा नित्या दशाष्टौ सिध्दयस्तथा ॥
पञ्चधा मुक्तयश्चापि रूपवन्त्यः पृथक् पृथक् ॥३७॥

तथा नौ प्रकार की निधियाँ अष्टादश सिद्धियां और पाचों प्रकार की मुक्ति सब पृथक् २ मूर्तिमान होकर निवास करते हैं ॥३७॥

कर्म योगौच वैराग्य ज्ञानञ्च साधनैः सह ॥
द्वितीया वरणे नित्यं स्वस्वरूपेण संस्थिताः ॥३८॥

कर्म योग वैराग ज्ञान अपने २ साधनों तथा स्वरूपों सहित द्वितीय आवरण में स्थित रहते हैं ॥३८॥

सच्चिज्ज्योतिर्मयं ब्रह्म निरीहं निर्विकल्पकम् ॥
निर्विशेषं निराकारं ज्ञानाकारं निरञ्जनम् ॥३९॥

सच्चिज्ज्योति स्वरूप ब्रह्म चेष्टा रहित निर्विकल्प (अपरिवर्तन शील) निर्विशेष निराकार ज्ञान स्वरूप माया रहित ॥३९॥

निर्वाच्यं निर्गुणं नित्य मनन्तं सर्व साक्षिकम् ॥
इन्द्रियै विषयै स्सर्वै रग्राह्यं तत्प्रकाशकम् ॥४०॥

अनिर्वचनीय निर्गुण अविनाशी अनन्त सर्व साक्षी इन्द्रिय और इन्द्रिय विषयों से अग्राह्य तथा उनका प्रकाशक ॥४०॥

न्यासिनां योगिनां यच्च ज्ञानिनाञ्चलया स्पदम् ॥
तृतीया वरणेतद्वै साकेतस्य विदु र्बुधाः ॥४१॥

तथा सन्यासियों योगियों और ज्ञानियों का लयास्पद अर्थात जहां पर यह सब लीन होते हैं विद्वान लोग इन सबको साकेत के तीसरे आवरण में अवस्थित होना बतलाते हैं ॥४१॥

गर्भोदक निवासीच क्षीरार्णव निवाश कृत ॥
श्वेतद्वीपाधिपश्चैव रमा वैकुण्ठ नायकः ॥४२॥

चौथ आवरण- जलान्तरशायी नारायण क्षीरार्णवशायी भगवान व श्वेत द्वीपाधिपति तथा रमा वैकुण्ठाधि पति विष्णु ॥४२॥

सलोका सगणास्सर्वे मथुराच महापुरी ॥
पुरी द्वारावती नित्या काशी लोकैक वन्दिता ॥४३॥

एवं समस्त लोकों के स्वामी अपने ऐश्वर्य व समाज सहित और नित्य महापुरी- मथुरा द्वारिका काशी जो लोकों में बन्दनीय हैं ॥४३॥

काञ्चीमाया पुरी दिव्या तथा चावन्तिका पुरी ॥
अयोध्या मेवसेवन्ते चतुर्थावरणैस्तथा ॥४४॥

तथा विष्णु काञ्ची मायापुरी (हरिद्वार) व अवन्तिका (उज्जैन) ये सब नित्य दिव्य पुरियां श्री अयोध्या जी की सेवा करती हैं। ये साकेत के चौथे आवरण में है ॥४४॥

के सात पूर्व दिग्भागे श्रीमती मिथिला पुरी ॥
सर्वाश्चर्य वती नित्या सच्चिदानन्द रूपिणी ॥४५॥

पांचवां आवरण- साकेत के पूर्व भाग में सर्व प्रकार से आश्चर्य जनक नित्य सच्चिदानंद स्वरूपिणी श्री मती मिथिला नगरी विद्यमान है ॥४५॥

हर्म्यैः प्रासाद वर्य्यैश्च नाना रत्न परिस्कृतैः ॥
विमानै र्विविधै रूपैश्चित्रध्वजपताकिभिः ॥४६॥

वह मिथिलापुरी नाना प्रकार के रत्नों में जड़ित दिव्य राज महलों व श्रेष्टभवनों से सुशोभित तथा विविध प्रकारके दिव्य बिमानों व चित्र बिचित्र के ध्वजा पताकाओं से सोभायमान है ॥४६॥

भ्राजते परिखा दुर्गा विविधोद्यान संकुला ॥
तस्या श्रीमान्महाराजः शीरकेतुः प्रतापवान् ॥४७॥

पुरी के चारों ओर में खाई किलों (सप्तदुर्ग) और विविध भांति के बाग बगीचियों से परिपूर्ण सुशोभित हो रहे हैं। उस दिव्य मिथिलापुरी में महाप्रतापमान श्रीमान् शीरकेतु (शीरध्वज) नाम के महाराजा हैं ॥४७॥

श्वसुरो रामचन्द्रस्य वात्सल्यादि गुणार्णवः ॥
निमिवंशध्वजः सूरश्चतुरंग बलान्वितः ॥४८॥

श्री शीरध्वज महाराज श्रीरामचन्द्र जी के ससुर वात्सल्या-दिगुणों के समुद्र निमिवंश में श्रेष्ठ सूर और चतुरङ्गिणी सेना बल के सहित हैं ॥४८॥

श्रीमतीभिः स्वपत्नीभिः परिवारस्त्वनेकसः ॥
दासी दास गणैर्नित्यं सेवितो वशती स्वराट् ॥४९॥

अपनी धर्मपत्नी श्री सुनयनादिको और अनेक परिवार दासी दास समूहों से नित्य सेवित स्वतन्त्र महाराज श्री जनक जी इस नगरी में निवास करते हैं ॥४९॥

दक्षिणस्यां दिशि श्रीमान्कोशलायागिरिर्महान् ।
भ्राजते चित्रकूटस्स चिन्मयानन्द मूर्तिमान् ॥५०॥

श्री कौशलपुरी के दक्षिण दिशा में सम्पूर्ण ऐश्वर्य से सम्पन्न चिन्मय आनन्द स्वरूप श्रीमान् पर्वत श्रेष्ठ चित्रकूट पर्वत है ॥५०॥

नाना रत्न मयै श्रृंङ्गै विचित्रैश्चित्र पादपैः ॥
सुधा स्वादु फलै रम्यैः पुष्पभारा वलम्बिभिः ॥५१॥

उस चित्रकूट पर्वत की चोटियां नाना प्रकार के रत्नों से युक्त रमणीय शिखरैं चित्र विचित्र भाती के वृक्षों से सम्पन्न हैं जिसमें सुन्दर स्वादिष्ट फल तथा सुगन्धित फूलों से झुके हैं ॥५१॥

लताजाल वितानैश्च गुञ्जद्भ्रमर सङ्कुलैः ॥
मत्त कोकिल सन्नादैः कूजद्भिश्चित्र पक्षिभिः ॥५२॥

लताओं के समूह और उनसे बने हुए वितान चन्दोवा के समान वृक्षों पर छाई हुई लतायें भ्रमर समूहों का गुञ्जायमान शब्द उन्मत्त कोकिलाओं का ऊँचे स्वर से कूकना तथा विचित्र २ प्रकार के पक्षी समुदाय का शब्द करना उस चित्रकूट के बन विभाग को शोभित कर रहा है ॥५२॥

नित्योन्मत्तमयूरैश्चनिर्झरै निर्मलाम्बुभिः ॥
सीतयासह रामस्य लीलारस विवर्द्धनः ॥५३॥

उस नित्य सुन्दर चित्रकूट पर्वत पर सदैव प्रफुल्लित रहनेवाले मयूर नृत्य करते हैं और झरनों से निर्मल जल बहता रहता है जो श्रीसीतारामजी के परस्पर लीला विलासरस को बढ़ाने में सहायक होते हैं ॥५३॥

चिद्रूपा काञ्चनी भूमिः समा रत्नै र्विचित्रिता ॥
समन्तात्पर्वतेन्द्रस्य दिव्य कानन मण्डिता ॥५४॥

उस पर्वत श्रेष्ट के चारों ओर दिव्य बन स्थल सुशोभित है। जहां की भूमी स्वर्णमयी चित्र विचित्र मणियों से निर्मित है चैतन्य रूपा है ॥५४॥

यत्र मन्दाकिनी रम्या वहती श्रीमती नदी ॥
मणिनिर्मल तोया च बन वैडूर्यं वालुका ॥५५॥

वहां पर सर्वैश्वर्य पूर्ण मनोहारिणी श्री मन्दाकिनी जी वहती हैं। जिसका जल निर्मल स्वच्छ मणियों के समान है और वैडुर्य आदि मणियों के समान प्रकाशमान वालुका है। ५५॥

गुञ्जन्मधुव्रत श्रेणी प्रफुल्ल कमला कुला ॥
चित्र पक्षि कुल क्वाण मुखरी कृत दक्तटा ॥५६॥

श्री मन्दाकिनी जी तथा सरोवरों में दिव्य कमल खिले हुये हैं। जिन पर भौरों के झुण्डों के झुण्ड गुञ्जार कर रहे हैं और दोनों किनारों पर नाना प्रकार के पक्षीगण विविध भांति के शब्द कर रहे हैं ॥५६॥

स्वर्ण स्फटिक माणिक्य मुक्ता बद्ध तट द्वया ॥
चित्र पुष्प लता पुञ्ज गुञ्जानि बिविधानि च ॥५७॥

दोनों किनारे स्फटिक मणियों से बंधे हुये हैं और नाना प्रकार की लताओं और पुष्प समूहों का रस पान करते हुये भौंरे गूंज रहे हैं ॥५७॥

मधुराणि सहस्राणि तस्यास्तीर द्वयोरपि ॥
सन्ति नित्य विहारार्थं जानकी रामचन्द्रयोः ॥५८॥

तिस श्री मन्दाकिनी जी के दोनों किनारों पर हजारों मधुर मनोहर कुञ्ज भवन श्री सीताराम जी युगल सरकारों के नित्य विहार के निमित्त बने हुये हैं ॥५८॥

अयोध्या पश्चिमे भागे कृष्णस्य परमात्मनः ॥
नित्यं बृन्दावनं धाम चिन्मयानंद मद्भुतम् ॥५९॥

श्री अयोध्या जी के पश्चिम दिशा में परमात्मा श्री कृष्ण भगवान का अद्भुत सच्चिदानन्दमयी नित्य श्री बृन्दाबन धाम है ॥५९

समन्ता द्भू समा यत्र काञ्चनी रत्न चित्रिता ॥
दिव्य वृक्ष लता कुञ्जै गुंजन्मत्तमधुब्रतैः ॥६०॥

वहां पर चारों ओर मणियों से जटित स्वर्णमयी भूमी है। दिव्य वृक्ष और लताओं से बनी कुञ्ज हैं जहां पर भ्रमरगण पुष्प परागपान से उन्मत्त हो गूंज रहे हैं ॥६०॥

नवीनैः पल्लवै स्निग्धैः फलै पुंष्पैश्च सन्नतैः ॥
नदत्पक्षि गणै श्चित्रै र्मयूरैश्च विराजितैः ॥६१॥

नवीन पल्लवों सचिक्कन रसयुक्त फल, फूलों के भार से झुकी हुई डालें नाना भांति के पक्षियों और भौंरों के शब्द व नृत्य से वह समस्त बन अत्यन्त शोभायमान होरहा है ॥६१॥

गोवर्द्धनो गिरि श्चात्र काञ्चनो रत्न मण्डितः ॥
लता पादप संकीर्णो गुहा निर्भर कूटवान् ॥६२॥

वहां पर गिरिराज गोवर्द्धन स्वर्णमयी दिव्य रत्नों से रचित लता वृक्षों से आच्छादित एवं कन्दरा और जलयुक्त झरनों से सुशोभित शिखर वाला है ॥६२॥

नदी यत्र महापुण्या कालिन्दी कृष्ण वल्लभा ॥
नील रत्न जलोत्तुङ्ग तरङ्गावर्त मालिनी ॥६३॥

वहां पर अत्यन्त पावनी श्री कृष्ण भगवान की अत्यन्त प्यारी कालिन्दी नदी है जो नील रत्न और जल की ऊँची तरंगों और भवरों के समूह वाली है अर्थात विलास सुखद तरंगें आनन्द की लहरें हैं ॥६३॥

फुल्ल पंकरुहामत्ता कुन्द भृङ्गविहङ्गमा ॥
स्वर्ण बद्ध तटा रत्न बालुका शोभिते भृशम् ॥६४॥

उस जमुना में कमल कुन्द पुष्प फूले हुये हैं जिन पर भौंरैं मतवाले हो रहेहैं गुञ्जायमान शब्द कर्ते हैं तथा पक्षिसमूहों का शब्द और जलविहार आनन्द वर्द्धक हो रहा है स्वर्ण रत्न जटित दोनों तट तथा मणि चूर्णमय बालू नाना प्रकार रंग रंग की शोभा छा रही है ॥६४॥

गोपी गोप गणै र्नित्यं गोवृन्दै र्गोप बालकैः ॥
श्री मन्नन्द यशोदाभ्यां भ्राता श्री मद्बलेन च ॥६५॥

वहां पर श्री गोपी गोपगण तथा गौ ग्वाल बालकों तथा श्री मान्नन्द जी यशोदा जी तथा भ्राता श्रीमान् बलदाऊ जी और ॥६५॥

सखिभिर्गोपकन्याभि र्वृषभानु सुतादिभिः ॥
सार्द्धं वसति तत्रैव श्री कृष्णः पुरुषोत्तमः ॥६६॥

गोप कन्यादि सखिगणों के साथ श्री बृषभान सुतादि संयुक्त लीला पुरुषोत्तम श्री कृष्ण जी उसी बृन्दाबन में सदैव विराजत हैं ॥६६॥

क्वण द्वेणु मनोहारी विहारी रास मण्डले ।
श्री राधिका मुखाम्भोज मकरन्द मधुव्रतः ॥६७॥

रासमण्डल में स्थित वृन्दाबन विहारीजी मनको लुभानेवाली मधुर वंशी बजा रहे हैं तथा श्री राधिका जी के मुख कमल सुगन्धी शौन्दर्यास्वादन करते हैं भ्रमर की तरह पान करते हैं ॥६७॥

सत्यांया श्चोत्तरे भागे महावैकुण्ठ संज्ञिकम् ॥
महाविष्णोः परं धाम ध्रुवं वेदैः प्रकीर्तितम् ॥६८॥

श्री अयोध्या के उत्तर भाग में महा वैकुण्ठधाम है जिसको वेद में महाविष्णु का लोक कहा गया ॥६८॥

सर्वतः खचित्ता रत्नै भूमिर्यत्र हिरण्मयी ॥
बापी कुण्ड तड़ागैश्च दिव्यारामै विराजते ॥६९॥

जहां की स्वर्णमयी भूमि रत्न जड़ित है तथा वावड़ी कुण्ड सरोवर दिव्य बगीचों से सुशोभित है ॥६९॥

समन्ताच्च नदी यत्र विरजा फुल्ल पङ्कजा ॥
स्वच्छस्फटिक तोयौघा वर्तो त्तुङ्ग तरङ्गिनी ॥७०॥

उस महावैकुण्ठ धाम के चारों ओर विकसित कमलों से पूर्ण विरजा नामक नदी है जिसमें स्फटिक मणिवत जल है जो [illegible] तरंग लहर ले रहे हैं ॥७०

स्वर्ण रत्न महा तीर्था वज्र स्फटिक शेकता ॥
मृग पक्षि गणोत्सृष्ट कोलाहल समाकुला ॥७१॥

स्वर्णमय रत्नजटित घाट हीरा स्फटिकादि युक्त बालू मृग पक्षिगणों के कोलाहल से पूर्ण अति शोभित वह बिरजा नदीहै ॥७१॥

प्रासादैः पार्षदेन्द्राणां विमानै र्विविधैस्तथा ॥
चित्रशालोत्तमै दिव्यैर्हर्म्य जालैस्सहस्रसः ॥७२॥

राजमहलों व पार्षद गणों के निवास स्थान नाना प्रकार के श्रेष्ठ विमानों उत्तम चित्रशालाओं तथा सहस्रों झरोखादि महलों से शोभित ॥७२॥

उच्चैर्ध्वज पताकाग्र्यै रत्न काञ्चन चित्रितैः ॥
ललना रत्न संघैश्च तल्लोकं शोभतेऽधिकम् ॥७३॥

तथा स्वर्ण रत्नों से चित्रित ऊंचे ध्वजा पताकाओं तथा स्त्री रत्नों से वह महावैकुण्ठ लोक अति ही शोभायमान है ॥७३॥

हैरण्यं सुमह द्रत्नैः खचितं परमायतम् ॥
तत्रैक भवनं प्रांशु प्रासादैः परिवारितम् ॥७४॥

स्वर्ण निर्मित बहु मूल्य दिव्य रत्नों से निर्मित अत्यन्त विस्तीर्ण एक भवन है जो अनेकों दिव्य भवनों से घिरा हुआ है ॥७४॥

सहस्रै कलशै र्भाति ध्वजैश्चित्रै श्चकेतुभिः ॥
मुक्तादाम वितानैश्च चित्र रत्न गवाक्षकैः ॥७५॥

वह भवन सहस्रों कलसों एवं चित्र विचित्र रंग के ध्वजा पताकाओं से शोभायमान है-तथा मोतियों की मालायें बितानों झरोखों में झालरें लगी हैं । ७५॥

मह द्रत्न कपाटैश्च मणिस्तम्भैस्सहस्रसः ॥
रत्नाङ्गण महाकक्षं भाति तल्लोक भूषणम् ॥७६॥

द्वारों पर दिव्य बहु मूल्य हीरों के किवाड़ हजारों मणियों से जटित रत्न खम्भ तथा अति विस्तीर्ण नाना मणि जटित आंगन अति शोभित हैं । प्रत्येक अंगों से अति शोभित वह महल उस लोक का भूषण बना है ॥७६॥

तन्मध्ये शेष पर्यंङ्के नित्यं सत्वैक विग्रहः ॥
आस्ते नारायणो नित्यं किशोरः षड्गुणार्णवः ॥७७॥

उस भवन के मध्य शेषशय्या के ऊपर नित्य परम सात्विक स्वरूप किशोर अवस्था छै गुणों के समुद्र श्री नारायण निवास करते हैं ॥७७॥

मेघश्यामश्चतुर्बाहुः तड़ित्पाटाम्बरावृतः ॥
स्यामस्निग्ध कलाब्राते रुल्लसन्मुखपङ्कजम् ॥७८॥

उन श्री नारायण का शरीर श्याम मेघ सदृश तथा चार भुजा पीत वस्त्र धारण किये घुंघुंरारे बाल चिक्कन है जो मन्दस्मित मुख में शोभित है ॥७८॥

मह द्रत्न किरीटेन कुण्डलाङ्गद कङ्कणैः ॥
श्रीवत्स कौस्तुभाभ्यां च सुगन्धै र्वनमालया ॥७९॥

शिर पर दिव्य रत्नों से जड़ित मुकुट कानों में कुण्डल भुजाओं में बाजूबन्द हाथों में कंकड़ वक्षस्थल पर श्री वत्सभृगुलता का चिन्ह व कौस्तुभ मणि एवं सुगन्धित बनमाला सुसोभित है ॥७९

वैजयन्त्यो पवीतेन मुद्रिका हार नूपुरैः ॥
स्वर्ण सूत्रेन काञ्च्यादि भूषणैर्भूषितो बिभुः ॥८०॥

वैजयन्ती माल यज्ञोपवीत मुद्रिका हार नूपुर स्वर्ण सूत्रों से नाना भांती के मणियों से तड़ित इव कर्धनी आदि आभूषणों से शोभित भगवान नारायण अतिशय शोभायमान हो रहे हैं ॥८०॥

शंख चक्र गदा पद्मा द्यायुधैश्चाप्यलङ्कृतः ॥
विभाति श्रीमतीभिश्च श्री भूलीलादि शक्तिभिः ८१

शंख चक्र गदा पद्मादि आयुधों को धारण किये हुये श्री मती श्री भू लीला आदि शक्तियों सहित नारायण अतिशय शोभायमान हो रहे हैं ॥८१॥

विश्वक्सेनादयो नित्य युक्ता मुक्ता श्शरण्यकाः ॥
शुद्धसत्त्वात्मकास्सर्वे श्यामलाङ्गा श्चतुर्भुजाः ॥८२॥

विश्वक्सेनादि नित्य मुक्त शरणागत जीव पार्षदों सहित जो सब श्याम वर्ण चतुर्भुजी सुद्ध सात्विक स्वरूपों से शोभित हैं ॥८२

दिव्यगन्धानुलिप्तांगाः पद्माद्मा पीतवाससः ॥
सुकेशा सुस्मिता दिव्य माल्या लङ्कार भूषिताः ॥८३

जो सब दिव्य सुगन्धियों से लिप्ताङ्ग वाले कमल समान नेत्र वाले पीताम्बर धारण किये घुंघुराले केश मन्द मुसुकान दिव्य मालादि भूषणों से शोभित हैं ॥८३॥

सर्वायुधधरा दिव्या ललना यूथसेविताः ॥
भगवन्तं श्रियाजुष्टं सेवन्तेऽहर्निशं मुदा ॥८४॥

सब प्रकार के आयुधों को धार किये हुये अनन्त दिव्य ललनाओं के झुण्ड से सेवित श्री जी से युक्त भगवान को रात दिन आनन्द मग्न पार्षद सेवा करते रहते हैं ॥८४॥

मिथिला चित्रकूटश्च श्रीमद्बृन्दावनं तथा ॥
महावैकुण्ठ मेतद्धि पञ्चमा वरणे मुने ॥ ८५॥

मिथिला चित्रकूट वृन्दावन महा वैकुण्ठ ये सब दिव्य श्रीमान शोभा सम्पन्न भगवत धाम श्री अयोध्या जी के पाचवां आवरण में स्थित हैं ।८५॥

ततस्तु परमानन्द सन्दोहं परमाद्भुतम् ॥
अयोध्यायो श्चतुर्दिक्षु चतुर्विंशति योजनम् ।८६॥

श्री अयोध्या जी के छठवां आवरण बाहर में चारों तरफ २४-२४ योजन विस्तार वाला परम अद्भुत आनन्द समूह दिव्य भूमी है ॥८६॥

सर्वतोवेष्ठितं नित्यं स्वप्रकाशं परात्परम् ॥
सच्चिदेक रसानन्द मायागुण विवर्जितम् ॥८७।

चारों ओर समस्त दिशाओं में चारों ओर नित्य स्वयं प्रकाशमान परात्पर सच्चिदानन्द स्वरूप मायिक गुणों से सर्वथा वर्जित दिव्यस्थल है जो सदा एकरस रहता है ॥८७॥

वां मनो गोचरातीतं प्रमोदारण्य संज्ञिकम् ॥
रामस्याति प्रियं धाम नित्य लीला रसास्पदम् ॥८८

मन वाणी से परे श्री रघुनाथ जी का अत्यन्त प्रिय धाम नित्य दिव्य लीला का स्थान नित्य बिहार रास जहां करते हैं वह प्रमोदवन है ॥८८॥

जाम्बूनद मयी यत्र भू स्समन्तात्प्रकाशते ॥
चिद्रूपिणी समा श्लक्ष्णा परानन्द विवर्द्धिनी ॥८६॥

जहां पर स्वर्णमय मणि जड़ित चारों ओर प्रकाशमान, सच्चिदानन्दमय परमानन्द को बढ़ाने वाली दिव्य लक्षण युक्त भूमि है ॥८६॥

चन्द्रकान्तो पलैश्चित्रा क्वचित्स्फटिको ज्वलैः ॥
मणिभिः पद्मरागैश्च क्वचिद्वज्रै र्महाप्रभैः ॥६०॥

कहीं पर चन्द्रकान्ता मणि कहीं पर उज्वल स्फटिक मणि कहीं पद्म राग कहीं परम प्रकाशमान हीरे लगे हुये हैं ।।६०।।

इन्द्र नीलोत्पलै र्विद्धा माणिक्यै र्विविधैर्क्वचित् ।
रत्नै वंशच्छदै र्भाति वैडूर्य्यैर्खचिता क्वचित् ।।६१।।

कहीं पर इन्द्रनीलमणि जड़े हुये तो कहीं पर विविध प्रकार के माणिक रत्न तथा वंशच्छद रत्न व वैडूर्य्य मणि जड़े हुये शोभित है ।।६१।।

अविद्धाभिश्च मुक्ताभिः प्रवालैश्च क्वचित् क्वचित् ।।
महार्हैं चित्रिता रत्नै र्नीलपीतसिता रुणैः ।।६२।।

कहीं पर बिना वेध के मोतियों व मूगों तथा बहुमूल्य नील पीत स्याम (नीलिमा) अरुण रंग के रत्नों से जड़ी हुई भूमी अत्यन्त शोभित है ।।६२।।

स्यामन्तकैर्भ्राजमानैश्चिन्ता रत्नमयैस्तथा ।।
चित्रिता वसुधा सर्वा द्योतयन्त्यधिकं प्रियम् ।।६३।।

स्यामन्तकमणि चिन्तामणि आदि नाना भांति के रंग वाली दिव्य मणियों से जड़ित समस्त भूमी अत्यन्त प्रकासित हो रही है ।।६३।।

पूर्वादिषु चतुर्दिक्षु क्रमेण तद्वने मुने ।।
गिरय स्सन्ति चत्वार स्तेषाँ नामानि मे श्रृणु ।।६४

हे भारद्वाज उस प्रमोदवन के चारों दिशाओं में चार पर्वत जिनका पूर्वादि क्रमसः अलग २ नाम मैं कहता हूं सुनो ।।६४।।

श्रृङ्गाराद्रि श्चरत्नाद्रिस्तथा लीलाद्रि रेव च ।।
मुक्ताद्रि श्च स्वया लक्ष्म्या द्योतयन्ति दिशोदश ।।६५।।

श्री शृङ्गाराचल रत्नाचल लीलाचल और मुक्ताचल ये चारों पर्वत पूर्व दक्षिण पश्चिम उत्तर इस क्रम से अपने २ दिशाओं को प्रकाशित करते हुये दशों दिशाओं में अपनी शोभा को फैलाये हैं ६५

आह्लादिन्याश्च पूर्वस्यां मुद्य द्भास्कर सन्निभः ॥
नील रत्नै रयं भाति शृङ्गाराद्रि र्मनोहरः ॥६६॥

आह्लादिनी शक्ति का जहाँ निवास है नील रत्नों से सुसोभित शिखरों बाले नीलाचल प्रातः कालिक सूर्य को तरह प्रकाशमान है ॥६६॥

दक्षिणस्यांदिशि श्रीम द्रत्नाद्रि र्द्योतयन्वनम् ॥
पीत रत्न मयः कान्त्याभू देव्या भ्राजते स्वयम् ॥६७॥

दक्षिण दिशा रत्नाचल पर्वत पर भू देवी का निवास है जो पीत रंग रत्नों से निर्मित समस्त वनों को प्रकासित करता हुआ शोभायमान हो रहा है ॥६७॥

प्रतीच्यां दिशि लीलाद्रि र्लीलाया ललितप्रभः ॥
राजते रक्त रत्नाढ्यो रामस्य रति वर्द्धनः ॥६८॥

पश्चिम दिशा लीला पर्वत पर में लीला देवी का निवास है लाल मणियों से परिपूरित जो अपनी प्रभा से प्रीयतम जू का प्रेम वर्द्धक उद्दीपक अति शोभित है ॥६८॥

श्री देव्या श्चापिलीलार्थे मुक्ताद्रि र्मण्डितो महान् ॥
उदीच्या मुज्वलै रत्नै श्चन्द्रकान्तै रुदञ्चते ॥६९॥

उत्तर में मुक्ताचल है जहां श्री देवी का निबास है यह पर्वत चन्द्रकान्त मणियों के परम दीव्य प्रकाश से प्रकाशमान अति सुन्दर है ॥६९॥

चित्रपुष्पौघ सम्पन्नै र्लता पुञ्जवितानकैः ॥
स्वल्पी कृत सुधा स्वादु फलभारातिसन्नतैः ॥१००

ये चारों पर्वत नाना भांति के रंग बिरंगे पुष्प समूहों व लताओं के मण्डपों से सम्पन्न हैं फलों का स्वाद अमृत को फीका करता हुआ डालें जमीन में झुकी हुई है ॥१००॥

नवीन पल्लवोपेतैर्गुञ्जन्मत्तमधुव्रतैः ॥
कूजच्चित्र द्विजै र्नील कण्ठकैः काम नादितैः ॥१०१॥

नवीन पल्लवादिकों पर पराग के लालच से भ्रमर मतवाले होकर गूंज रहे हैं चित्र विचित्र पक्षि नील कण्ठादि सुक पिक मयूर कामोद्दीपक कल्लोल करते हैं ॥१०१॥

प्रमत्त कोकिल क्वाण मुखरी कृत दिङ्मुखैः ॥
विचित्रै र्विविधैः स्निग्धैर्वृक्षौर्नित्य मधु स्रवैः ॥१०२॥

बसन्त ऋतु शब्द श्रेष्ठ कोयली रूपसे उन्मत्त होकर उच्च स्वर से सम्पूर्ण दिशाओं को शब्दायमान कर रहो हैं विचित्र विविध वृक्ष नित्य मधु वर्षा कर रहेहैं ॥१०२।

उन्मत्तैश्शिखरैर्भान्ति स्स्पन्द मानैश्च निर्झरैः ॥
गुहाभिश्च विराजन्ते चत्वारस्ते नगोत्तमाः ॥१०३

वे श्रेष्ठ चारों पर्वत ऊँची चोटियाँ जल के बहते हुये झरना के शब्द मनोहर गुफाओं निन्तर सुशोभित होरहे हैं । १०३॥

तत्प्रमोदवने सन्ति मधुराणि नवानिच ॥
वनानि द्वादशैतानि तन्नामानिश्रृणुष्वमे ॥१०४॥

इस प्रमोदबन में मनोहर और नवीन द्वादश बन हैं जिनके नाम मुझ (वशिष्ठ जी) से सुनो ॥१०४॥

श्री शृङ्गार बनं भ्रान्तं बिहार बन मद्भुतम् ॥
तमालञ्च रसालञ्च चम्पकं चन्दनं तथा ॥१०५॥

मनोहर श्री सम्पन्न शृङ्गारबन १ अद्भुत विहार बन २ तमाल बन ३ रसाल बन ४ चम्पक बन ५ चन्दन बन ६ ॥१०५॥

पारिजात बनं दिव्य मशोक वन मुत्तमम् ॥
विचित्राख्यबनं कान्तं कदम्बबन मेवच ॥१०६॥

दिव्य पारिजात बन ७ उत्तम अशोक बन ८ कान्तिमय विचित्र बन ९ कदम्ब बन १० तथा और– ॥१०६॥

नथा नङ्ग बनं रम्यं वनं श्री नागकेशरम् ॥
द्वादशैतानि नामानिवनानां कथितानिमे ॥१०७॥

रमणीय अनङ्ग बन ११ व नागकेशर बन १२ ये ही बारह बन हैं जिनका नाम मैंने आप से कहा है ॥१०७॥

सर्वेषु सान्द्रनीलाभ्रनिभेषु विपिनेषु च ॥
निविडेषु नवानित्या विचित्राविविधा द्रुमाः ॥१०८

इस सब बनों की आभा श्रेष्ठ इन्द्र नीलमणि के समान व नील आकाश के समान है जिनमें नबीन घनेचित्र विचित्र भांती के बृक्ष सदैव लगे रहते हैं ॥१०८॥

चिन्मया कमनीयाश्च किशोराः काम विग्रहाः ॥
सुस्निग्धाः कोमलाःसूक्ष्मा श्रोतन्त्यमृतविप्लुषः॥१०९

सच्चिदानन्दमय रमणीयता से पूर्ण इच्छामय रूप धारण करने वाले नित्य किशोर अवस्था सम्पन्न अनुराग से भरे कोमल किसलय पत्ता वाले अमृत की नित्य वर्षा करने वाले इस प्रकार के वृक्ष हैं ॥१०९॥

नवीनैः पल्लवैः श्लक्ष्णैः मृदुलैः र्वायुचञ्चलैः ।
विचित्रैः र्लम्बितैः र्नील हरित पीतारुणैः र्घनैः ॥११०॥

जिनमें सदैव नवीन पल्लव मन्द वायू के झोकों से चलायमान हैं और जिनकी लम्बी डालियों में नील हरे पीले लाल रंग के घने ॥११०॥

पुष्पाणां पञ्चवर्णानां दिव्यानाञ्च सुगन्धिनाम् ।
नवानामप्रमेयाणां नित्याना मभितो भृशम् ॥१११॥

पांच प्रकार के पुष्प जिनमें दिव्य सुगन्ध है जो सदैव नवीन अपरमित सुखद दायक चारों दिशाओं में अत्यन्त सुगन्धी दे रहे हैं ॥१११॥

प्रफुल्लानां सुधास्वादुफलानाञ्च विशेषतः ।
महाभारेण शाखाभिलुंठन्ति धरणी तले ॥११२॥

विशेष कर उन वृक्षों के फलों में अमृत के समान स्वाद बना रहता है व प्रफुल्लित पुष्प फलों के भार से शाखायें पृथिवी तल पर झुकी हैं ॥११२॥

दिव्य स्वर्ण महारत्न जालैश्चित्रित वेदिका ।
प्रफुल्ल पञ्चधा पुष्प व्रतत्योघ वितानकाः ॥११३॥

दिव्य स्वर्ण व बहुमूल्य रत्न समूहों से सजी हुई वेदिकायें हैं जिनपर पांचों प्रकार के पुष्पों से निर्मित वितान लगे हुये हैं ॥११३॥

सुवर्ण वल्कला काचिन्मुक्ता पुष्पा वतंशका।
चिन्तामणि फला नीलरत्न पल्लव शोभिताः॥११४॥

वृक्षों की किसी की छाल स्वर्ण सम तथा पुष्प मोतियों समान फल चिन्तामणि सदृश पल्लव नील रत्नों के सदृश अतिशय शोभित हो रहे हैं॥११४॥

नाना पुष्परज स्पृक्त शवलाः षट्पदा मुदा।
भ्रमन्ता यत्र गुञ्जन्ति भ्रमन्तो मन्ध गृध्नवः॥११५॥

भ्रमर विविध प्रकार के पुष्पों के पराग से सने हुये प्रसन्नता पूर्वक मतवाले से गूंज रहे हैं सुगन्ध के लोभ में डारही डारों में घूम रहे हैं॥११५॥

मत्ता पुष्प रस प्रीत्या पतन्ति पृथिवी तले।
पुनरुत्थायधावन्ति पुष्पौघेषु मुहु मुहुः॥११६॥

अतिशय अनुराग से पराग पान करके मतवाले भ्रमर पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं फिर उठ २ कर दौड़ कर बार २ फिर २ पुष्पों में बैठते है॥११६॥

प्रविलीय पलायन्ते द्रुम मन्यत्र यूथशः।
भ्रमरीभिस्समं सर्वे विक्रीडन्ते समन्ततः॥११७॥

अदृश्य होकर भागते हैं दूसरे बृक्ष लताओं में झुण्ड २ होकर विहरते हैं फिर २ अपनी भ्रमरियों के साथ इधर उधर दौड़ते हैं॥११७॥

क्वचित्पारावत व्राताः कपोताश्च वणन्तिहि।
रटन्ति रागिणोत्यन्तं चञ्चलाश्चातकाः क्वचित्॥११८॥

कहीं कहीं पर कपोतें और कबूतरों के झुण्डराग रागिनियों के समान शब्द करते हैं कहीं पर चञ्चल चातक अति अनुराग से गान कर रहे हैं ॥११८॥

अनन्ता निर्वृता मत्ताः क्वचित्कूजन्ति कोकिलाः ।
सारिकाश्च शुकाश्चित्राः क्वचिद्गायन्ति संघशः ॥११९॥

कहीं पर सब प्रकार तृप्त हुये उन्मत्त कोकिल कूंक रहे हैं कहीं पर सुक सारिकायें चित्र विचित्र रीति से अपनी २ भाषाओं में इकट्ठे गा रहे हैं ॥११९॥

चन्द्रमण्डल संकाशाः प्रमदाभिर्मुदान्विताः ॥
हंसा मुक्तान्यदन्तश्च नर्दति मधुरं क्वचित् ॥१२०॥

कहीं पर हंश हंशनियों के सहित चन्द्रमण्डल के समान आनन्द पूर्वक मोतियों को चुग रहे हैं और मधुर शब्द उच्चारण कर रहे हैं ॥१२०॥

क्वचित्क्रौञ्चाश्चकोराश्च कलहंशाश्च सारसाः ।
विचित्राः पक्षिणश्चान्ये स्वर्धाभिर्मनोहराः ॥१२१॥

कहीं पर बगुला चकोर कलहंश सारसादि विचित्र २ भांति के अन्य पक्षिगण अपनी २ पक्षियों सहित मनोहर शब्द कर रहे हैं ॥१२१॥

रमन्ते नादयन्तश्च वनं नाना रवैर्भृशम् ।
तिरस्कृता मृता स्वाद फलानि विविधानि च ।१२२

इस प्रकार विविध नादों से गुञ्जायमान बनमें विविध बिहार पक्षियों का तथा विविध प्रकार के फलों का स्वाद अमृत को फीका कर रहे हैं ॥१२२।

अदन्ति तेषु सर्वेषु विचित्रेषु वनेषु च ।
प्रनृत्यन्ति मयूरीभिस्सार्द्धं मत्ताशिखण्डिनः १२३

वे सब पक्षिगण उन विचित्र बनों में स्वादिष्ट फलों को प्रेम पूर्वक खाते हैं और मयूर मयूरियों के साथ उन्मत्त होकर नृत्य करते हैं ॥१२३॥

नित्य श्री कर्णिकाराश्च कुन्द वृन्दाश्च मल्लिकाः ।
लवङ्ग तिलका जात्यो मालत्यो यूथका स्तथा ॥१२४

उन बनों में सदैव श्री पुष्प कनैर कुन्द मल्लिका लोंग (जयन्ती) अगस्त पुष्प जाई मालती जूही और ॥१२४॥

माधव्यश्चैव केतक्यो बासन्त्यः परमाद्भुताः ।
स्थलजाः कञ्ज वृन्दाश्च सेवत्यो विविधा स्तथा ॥१२५

रातर नी केतकी आदि बसन्त ऋतु में होने बाले परम अद्भुत पुष्प कमल, थल कमल, जलज पुष्पों के झुण्ड विविध प्रकार की सेवती तथा ॥१२५।

अन्याश्चित्र लताः स्वैः स्वैः पुष्पौघैर्विविधैर्भृशम् ।
कारयन्ति वनं सर्वं दिव्य गन्धादि वासितम् ॥१२६

रंग बिरंग की लतायें अपनी २ जाती के अनुसार विविध पुष्पों से युक्त अपनी२ सुगन्धियों से उस बन को अतिशय सुवासित कर रहे हैं ॥१२६॥

वाताश्च सीतला मन्दा सुगन्धास्तद्वने सदा ।
प्रवान्ति परमोनन्द वर्द्धना षट्पदानुगाः ॥१२७॥

उस बन में सदैव मन्द सुगन्ध शीतल वायू परमानन्द को तथा भ्रमर गणों के उत्साह को बढ़ाने वाले प्रवाहित हैं ॥१२७॥

नाना पुष्प रजोभिश्च रञ्जिताभू विराजते ।
क्वचित्पीता क्वचिन्नीला हरिद्रक्ता सिता क्वचित् ।१२८

विविध भांति के पुष्प पराग बिखरने से पृथ्वी पीली नीली हरी लाल कहि २ स्याम सफेदादि रँगों से रँगी हुई अतिशय शोभित हो रही है ॥१२८॥

पादप प्रच्युतैः पुष्पैस्सञ्छन्ना पञ्च वर्णकैः ।
कुथेवाभाति विस्तीर्णा चित्रवर्णा क्वचित्क्वचित् ॥१२६

बृक्षों से गिरे हुये पाँचों प्रकार के पुष्पों से ढँकी हुई पृथ्वी ऐसी शोभायमान हो रही है कि मानो चित्र बिचित्र गलीचे बिछे हुये हों ॥११६॥

दीर्घिका विविधास्तत्र मणि निर्मल वारिणा ।
पूर्णा माणिक्य शोपाना स्फटिकोपल कुट्टिमाः ।१३०

उस बन में नाना भाँति के बावणियां उज्ज्वल मणियों के समान निर्मल जल से परिपूर्ण है जिनमें मणि माणिक स्फटिकादि की सीढ़ी बनी हैं ।।१३०॥

तीरस्थ द्रुम सन्छन्नाः प्रफुल्ल कमलोत्पलाः ।
कूजन्ति पक्षिणश्चित्रै गुंञद्भृङ्गै र्विनादिताः ।।१३१।

उन वावलि आदि के किनारों पर छोटे बड़े वृक्ष बड़े ढंग से लगे हैं सरोवरों में कमल खिले हैं चित्र विचित्र पक्षि व भ्रमरों का नाद हो रहा है ॥१३१॥

फुल्ल पंकज कल्लोल जलागुञ्जन्मधुव्रताः ।
पुष्करिण्यो द्विजोद्घुष्ट द्रुम गुल्म लता वृताः॥१३२

वृक्ष लतादि तथा छोटे २ वृक्षों से सुशोभित तलाव पोखरादि में पक्षियों का कल्लोल व खिले हुये कमलों पर भ्रमरों का गुञ्जार मचा है ॥१३२॥

तटाकानि सुरम्याणि विशालानि वने वने ।
विचित्र मणि सोपान तीर्थानि विविधानि च ॥१३३

प्रति एक बन के अन्दर बहुत बन होते हैं जिनमें रमणीय तलाव छोटे बड़े सब विचित्र घाट व सीढ़ियाँ अनेक रंग ढंग की मणियाँ जड़ी हैं ॥१३३॥

कुण्डानि कमनीयानि सन्ति स्फटिक वारिभिः ।
पूर्णानि फुल्ल कल्हार शतपत्राण्यनेकशः ॥१३४॥

स्फटिक मणि के समान स्वच्छ जल से भरी हुई सुन्दर कुण्ड है जो अनेकों प्रकार के कल्हारादि कमलों के खिलने से अनेक प्रकार से शोभित हैं ॥१३४॥

भृङ्ग संघ प्रगीतानि शुक हंस युतानि च ।
सन्नादित वनान्तानि नदद्भिश्चित्रपक्षिभिः ॥१३५

उन बनों में चित्र विचित्र पक्षि शब्द करते हैं भौंरों का समूह व शुक हंसादि के कल्लोल से बन के प्रत्येक अंग गुञ्जित हो रहे हैं ॥१३५॥

प्रासादा मण्डपास्सादा काननानां कचित्कचित् ।
मध्ये २ प्रदीपन्ते वेदिका विविधास्तथा ॥१३६

उन बनों में कहीं पर उत्तम २ महल बने हुये हैं कहीं पर मण्डपों में बीच २ मणिमय वेदिकायें बनी है जो अनेक रंग से प्रकाशित हैं ॥१३६॥

काञ्चयना श्चन्द्रकान्तैश्च मणिभिश्चित्रिता कचित् ।
चिन्ता रत्नै र्कचिच्चैन्द्र नील रत्न विचित्रिताः ।१३७

उन वेदिका व मण्डप व महलों में कञ्चन मणि चिन्तामणि चन्द्रकान्त मणि इन्द्रनील मणि आदि रत्नों से यथा योग्य चित्र बने हैं ॥१३७॥

पद्मराग प्रयोगैश्च क्वचिद्वज्रै स्स्फुरत्प्रभैः ।
वैडूर्यैर्भासमानैश्च स्यमन्तैः खचिता क्वचित् ।१३८

कोई पद्म राग मणियों से कोई प्रकाशमान हीराओं से कोई वैडूर्य मणियों से तथा कोई स्यामन्तक मणियों से जड़ित हैं ॥१३८॥

क्वचिद्वंशच्छदे र्शान्ति माणिक्यैश्च मनोहरैः ।
हरि द्रत्नैश्च मुक्ताभिः प्रवालैश्चापि मण्डिताः ।१३९

कहीं वंशच्छद पोख राजमणियां कहीं मनोहर माणिक्यों से व हरित रत्नों से मोती मूगादि से जडित वेदिकादि शोभित हो रहे हैं ॥१३९॥

अन्यैर्विचित्र रत्नैश्च मृदुला स्तरणै स्तथा ।
मुक्तादाम वितानैश्च दर्पणैश्चाप्यलंकृताः ॥१४०

कोई २ विचित्र रत्नों से जडित व कोमल बिछावनो से युक्त तथा मोति मोतीलर बिताने और खम्भ व दिवालों में दर्पणों से युक्त हैं ॥१४०॥

मुक्त पुष्प लता जाल कुञ्जानि मधुराण्यलम् ।
भृङ्ग पक्षि प्रघुष्टानि तद्बने सन्त्यनेकशः ॥१४१॥

मुक्ताओं के तथा पुष्पोंके व लताओं के अतिशास मधुरकुञ्ज हैं जिनमें पक्षि भृङ्गादि अनेकों विहार की सामग्रीयों से पूर्ण हैं ॥१४१

बसन्तोहि क्वचित्तत्र नित्यमेव विराजते ।
निदाघश्च क्वचित्प्रावृट् क्वचिन्नित्यं शरत्तथा ।१४२

वहां पर किसी कुञ्ज में बसन्त अनुकूल कहीं गृष्म कहीं वर्षा कहीं सरद ऋतु अनुकूल साम्रग्रियों से । नित्य निवास करते हैं ॥१४२॥

हेमन्त श्च क्वचिन्नित्यं शिशिरो वर्तते क्वचित् ।
षडेते ऋतव स्स्वस्व बिभूत्या सम्वसन्तिहि ॥१४३॥

कहीं नित्य हेमन्त तो कहीं नित्य शिसिर इस प्रकार छहों ऋतुं अपनी २ सम्पतियों से प्रकाशमान सदा उन बनों में निवास कर प्रभू की सेवा करती हैं ॥१४३॥

देशी देवगिरि श्चैव बैराड़ी टोडिका स्तथा ।
ललिता चाथ हिण्डोली रागिण्यः षड् प्रकीर्तिताः१४४

प्रत्येक ऋतु के लायक राग रगिनियां देशी देवगिरी बैराड़ी टोड़ी ललिता हिंडोली ये जो छः रागनियां कही गई हैं सो—॥१४४॥

मूर्ति मन्तीभिरेताभिः स्स्वपत्नीभि र्मनोहरः ।
वसन्सो मूर्तिमान् रागो वसन्ते वसते सदा ॥१४५

मूर्तिमान मनोहर यह वसन्त राग की रागनियां हैं जो सदैव अपनी पत्नियों सहित वसन्त ऋतु में विद्यमान रहता है ।१४५

भैरवी गर्जरी चैव रेवा गुण करी तथा ।
बङ्गाली बहुली चैव रागिण्यः षड् सुविग्रहाः ॥१४६

उसी प्रकार भैरवी गुर्जरी रेवा गुणकरी बङ्गाली वहुली ये छः सुन्दर विग्रह वाली हैं ।।१४६।।

एताभि स्स्वसहायाभिर्योषिद्भि भैरवोऽभ्दुतः ।
राग स्सम्वसते नित्यं निदाघे मूर्तिमान्स्वयम् १४७

अपनो सहायका पत्नियों को लेकर परम अद्भुत जो भैरव राग है वह मूर्तिमान स्वरूप से गृष्म ऋतु कुञ्ज बनों में रहता है ।।१४७।।

मल्लारी सोरठी चैव शावेरी कौशिकी तथा ।
गान्धारी हरिश्रृङ्गारी रागिन्यषषड् सुखप्रदा ॥१४८

मल्लारी सोरठी सावेरी कौशिकी गान्धारी हरिश्रृङ्गारी सुखदायक ये छः रागनियों को ।।१४८।।

स्वरूपाभि स्स्व भार्याभि रेताभि र्मूर्तिमान्महान् ॥
प्रावृषि प्रीति कृन्नित्यम्मेघ रागः प्रतिष्ठितः ॥१४६

जो कि अतिशय सुन्दरो हैं अतिशय सुन्दर मेघराग इन अपनी पत्नियों के साथ वर्षाऋतु में अनुराग की प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है ।।१४६ ।

विभाषी चाथ भूपाली मालश्री पटमञ्जरी।
वटुहन्सी च कर्णाटी रागिण्योऽद्भुत विग्रहाः ॥१५०॥

इसी प्रकार विभाषी भूपाली मालश्री पटमंजरी वटुहन्सी कर्णाटी ये छः—॥१५०॥

स्वदारैः षड्भिरेताभिः पुत्र पौत्र स्नुषादिभिः।
रूपवान् पञ्चमोरागो सर्वदा शरदिस्तथा ॥१५१॥

अद्भुत विग्रह वाली अपनी स्त्रियों तथा पुत्र नाती पोता पतोहू पुत्रियों के साथ सुन्दर रूपवान पञ्चमराग हमेशा शरदऋतु बनों में रहता है ॥१५१॥

कामोदी चापि कल्याणी आभीरी नाटिका तथा।
सालङ्गी नट हम्मीरी रागिण्यस्सुरति प्रदाः ॥१५२॥

कामोदी कल्याणी आभीरी नाटिका सालंगी नट हम्मीरी ये छः रागनियां अति अनुराग को देने वाली हैं ॥१५२॥

दिव्य रूपाभिरेताभि स्वस्त्रीभिर्दिव्य रूपवान्।
हेमन्तेऽतियुतो रागो बृहन्नाट्यश्च नित्यदा ॥१५३॥

इन सब दिव्य रूपधारिणी अपनी पत्नियों सहित अत्यन्त प्रीती पूर्वक दीपक राग सदैव हेमन्त ऋतु में विद्यमान रहताहै ॥१५३

मालवी त्रीवनी गौरी केदारी मधु माधवी।
तथा पहाड़िका चैव रागिण्य श्रुति वल्लभाः ॥१५४॥

मालवी त्रिवनी गौरी केदारी मधुमाधवी पहाड़ी ये छः ।१५४

षड्भिर्मूर्तिमतीभिस्स्व नायकाभिश्च मूर्तिमान्।
शिशिरे संस्थितोनित्यं श्रीरागस्सकुटुम्बकः ॥१५५॥

कानों को अति प्रिय लगने वाली रागिनियों अतिशय सुन्दरी मूर्तिपतियों के साथ तथा और भी परिवार के साथ श्रीराग शिशिर ऋतु में अति प्रिय लगता है ॥१५५॥

रागाष्षट् पुरुषाश्चेत्थंषट त्रिंशच्च तथास्त्रियः।
रागिण्यः परिवारैश्च निवसन्ति सदावने ॥१५६॥

ये पुरुष रूपधारी छः राग और स्त्री वेषधारी ३६ रागिनियां अपने २ परिवार समेत सदैव बन में निवास करते हैं ॥१५६॥

प्रमोद काननं षष्ठ मेतदावर्णं यन्महत्।
तवभक्त्या प्रसन्नेन मया प्रोक्तं द्विजोत्तम ॥१५७

हे ब्राह्मण श्रेष्ठ भरद्वाज आपकी भक्ति से प्रसन्न होकर मैंने आपको यह प्रमोदबन का श्रेष्ठ छठवां आवर्ण का वर्णन किया ॥१५७॥

ततश्च सरिता मादि कारणं सरयू सरित्।
श्रीमती सरस्वती नित्या सर्वलोकैक पावनी ॥१५८॥

इसके उपरान्त सातवें आवरण में श्रीमती सरस्वती आदि समस्त नदियों की आदि कारण रूपा सर्वलोक पावनी श्री सरयू बहती हैं ॥१५८

सच्चिद्घन परानन्द रूपिणी रामवल्लभाः।
विरजाद्याः परानद्यो यदंशा लोक विश्रुता ॥१५९॥

श्री सरयू जी सत्चित् घन परानन्द स्वरूपिणी श्री रामचन्द्र को अति प्रिया हैं जिनके अंश से विरजादि लोक प्रसिद्ध नदियां उत्पन्न होती हैं ॥१५९

यन्नामोच्चारणात्सद्यो मुक्त संसार बन्धनात् ।
प्राप्नुयु दिव्य देहाश्च ससीतं रघुनन्दनम् ॥१६०॥

जिनके नाम उच्चारण मात्र से शीघ्र दिव्य शरीर होकर संसार से मुक्त हो श्री सीताराम जी को जीवात्मा प्राप्त कर जाता है ॥१६०

तज्जलं निर्मलं कान्तं गम्भीरावर्त शोभितम् ।
उत्तुङ्ग विलस द्वीची धवली कृत दिङ् मुखम् ॥१६१

श्री सरयू का जल निर्मल कान्तिमान गम्भीर भंवरों से शोभित ऊंची लहरों से दिशाओं को प्रकाशित करती हुई मनको मोहित कर रही हैं ॥१६१

मन्दी कृत शरच्चन्द्रं पेयं चन्द्रमणि प्रभम् ।
तिरस्कृत सुधास्वाद् कुन्द बृन्द हिम द्युतिः ॥१६२॥

चन्द्रमणि सदृश प्रकाशवान कुन्द पुष्प समूह सदृश सुगन्धित हिम सदृश सफेद श्री सरयू जी का चन्द्रमा व अमृत के को तिरस्कार करने वाला जल है ॥१६२

प्रफुल्लैः पङ्कजैरक्तैश्शुक्लैः पीलैस्तथा सितैः ।
अन्यै र्नाना विधै र्दिव्यै स्सुगन्धी कृत मङ्ग तम् ॥१६३

श्री सरयू जी में लाल सफेद पीला श्यामादि विविध रंग के कमल दिव्य सुगन्धित आश्चर्यमय शोभा वाले और अन्य भी पुष्प खिले हुये हैं ॥१६३॥

हंशैर्क्रौञ्चै श्चकोरैश्च चक्र वाकैश्च सारसैः ।
सदारै रति कूजद्भिश्चित्रै श्चान्यैः पतत्रिभिः ॥१६४॥

हंश बगुले चकोर चकवा चकवी सारस लक्ष्मणादि पक्षि-गण अपनी २ दम्पती जोड़ियों से चित्र विचित्र रूप व शब्दों से अति शोभित हो रहे हैं ॥१६४॥

भ्रमद्भिर्भ्रमरै र्मत्तै र्गुञ्जद्भि र्मधुरै स्स्वरैः ।
मत्ताभिर्भ्रमरीभिश्च समन्ता दूपरी कृतम् ॥१६५॥

मधुर स्वर से गूंजते हुये मतवाले भ्रमर अपनी भ्रमरियों के साथ पुष्प रस पराग को पान करते हुये फूलों को ऊपर कर रहे हैं ॥१६५॥

मणिभिश्चन्द्र कान्तैश्च पद्मरागैश्च कौस्तुभैः ।
क्वचि द्धंशच्छदै र्वज्रै न्द्रनीलै स्स्यमन्तकैः ॥१६६॥

और उन सरयू जी के घाटों में कहीं चन्द्रकान्ता मणि कहीं पद्मराग मणी कौस्तुभ पोखराज हीरा व इन्द्रनील व स्यामन्त-कादि तथा ॥१६६॥

चिन्तारत्नै श्चवैडूर्य्यै मुक्ताभिस्स्फटिकैः क्वचित् ।
माणिक्यैश्च क्वचि द्रत्नै र्नाना वर्णैस्सकाञ्चनैः ॥१६७॥

चिन्तामणी वैडूर्य्य मणि मुक्ता मणिक्यादि अनेक रंग के अनेक मणि और सुवर्णादि से जड़े हैं ॥१६७॥

खचितानां सुतीर्थानां सहस्राणां तट द्वये।
प्रतिबिम्बै जलं स्वच्छं नाना वर्णं प्रकाशते ॥१६८॥

इस प्रकार श्री सरयू जी के दोनों तट हजारों प्रकार से मणि जड़े सुन्दर घाटें बने हैं उन घाटों का प्रतिबिम्ब जल की धारा में कई प्रकार के रंग दीखते हैं ॥१६८॥

वज्र स्फटिक मुक्तानां सूक्ष्म चूर्णाभिवालुका।
तथा चन्द्र मणीनाञ्च द्योतयन्ति सरित्तटे ॥१६९॥

श्री सरयू जी का वालू- हीरा स्फटिक मणि मुक्ता चन्द्रमणी आदिकों के चूर्ण के समान किनारों पर प्रकाशमान होरहा है ।१६९

एवं श्री सरयू रम्या परमानन्द दायिनी।
सप्तमावरणे विद्धि साकेतस्थ सरिद्वरा ॥१७०॥

इस प्रकार परमानन्द को देने वाली अति रमणीया श्री सरयू जी श्री साकेत धाम के सातवां आवरण में सुशोभित हो रही है ॥१७०॥

सप्तावरण मध्ये तु राजते राम वल्लभा।
अयोध्या नगरी सच्चित्सान्द्रानन्दैक विग्रहा ॥१७१॥

इस प्रकार सात आवरणों के मध्य में सच्चिदानन्द स्वरूपिणी श्री राम जी की परम प्रिया श्री अयोध्या नगरी अद्वितीय शोभित है ॥१७१॥

इति ते वर्णितं नित्यं सप्तावरण संयुतम्।
रामधामैक सिद्धान्त स्वरूपं मुनि सत्तम् ॥१७२॥

हे मुनि श्रेष्ठ भरद्वाज इस प्रकार सिद्धान्त स्वरूप सदैव सप्तावरणों से युक्त श्री राम धाम का मैंने तुमसे वर्णन किया ॥१७२॥

पठेद्वा श्रृणुयान्नित्यं य एतद्भक्ति संयुतम्।
स गच्छेत्परमंधाम साकेतं योगि दुर्ल्लभम् ॥१७३॥

जो इसको भक्ति पूर्वक पढ़ता सुनता है वह योगि दुर्लभ साकेत धाम को जाता है ॥१७३॥

ज्ञान योग श्चध्यानञ्चतप श्चात्म विनिग्रहः।
नाना यज्ञाश्च दानानि सर्व तीर्थावगाहनम् ॥१७४॥

ज्ञान योग तपस्या आत्म निग्रह विविध यज्ञ दान सब तीर्थ स्नान ध्यान ॥१७४॥

एतस्य पाठ मात्रेण श्रवणेन च यत्फलम्।
भवेत्तस्य कलां विप्र सहस्री मपि नाप्नुयुः ॥१७५॥

इस ग्रन्थ के पाठ तथा श्रवण करने से जो फल होता है उसकी हजारवें अंश में भी पूर्वोक्त साधनों का फल पहुंच नहीं सकता है ॥१७५॥

भरद्वाज उवाच

तत्वामृतं पीत मनन्य चेतसा,
सुधाधिकंतवन्मुख निर्गतम्मया।
धन्योऽस्म्यहं नाथ पदद्वयं प्रभो,
नमामि नित्यं च तवास्मिकिङ्करः ॥१७६॥

इतना सुन कर श्री भरद्वाज जी श्री वशिष्ठ जी से बोले कि हे प्रभो आप के श्री मुखारविन्द से निःश्रित इस दिव्य तत्व रूप अमृत को मैं एकाग्र चित्त से श्रवण पान किया हूं अतः मैं धन्य हूँ आपका किंकर हूँ आपके श्री युगल चरणों में नत मस्तक हूँ ॥१७६॥

इति श्री मद्वशिष्ठ संहितायां श्री वशिष्ठ भरद्वाज सम्वादे श्री राम धाम नित्य स्वरूप वर्णनं नाम षड्विंशतितमो ऽध्यायः ॥

जिन श्री अयोध्या जी का अथर्व वेद-दशम काण्ड सूक्त दो मन्त्र ३१ में भी इस प्रकार वर्णन है कि—

अष्ट चक्रा नव द्वारा देवानां पू रयोध्या ।
तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषा वृतः ॥३१॥

आठ चक्र, नौ द्वार वाली देवताओं की अयोध्या नगरी है उसमें स्वर्ग के देने वाला हिरण्यमय ज्योति से पूरी तरह ढका हुआ है ॥३१॥

तस्मिन् हिरण्यये कोशे त्र्यरे त्रि प्रतिष्ठिते ।
तस्मिन् यद् यक्षमात्मन्वत् तद् वै ब्रह्मविदोविदुः ३२

उस हिरण्य मय कोश में पूजन के योग्य आत्मा का जो स्थान है उसे ब्रह्म के जानने वाले भले प्रकार जानते हैं ॥३२॥

प्रभ्राजमानां हरिणीं यशसा सं परीवृताम् ।
पुरं हिरण्ययीं ब्रह्मा विवेशा पराजिताम् ॥३३॥

पाप नाश करने वाले यशस्व होने के कारण दमकते हुये कभी भी पराजित न हुये हिरण्यमय पुर में ब्रह्म प्रविष्ट होता है ३३